काव्य–कलश

[माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरीय
शिक्षकों के लिए]

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

ज्ंइसम वि्ब्वदजमदजे

- विषयानुप्रवेश
- काव्य का स्वरूप एवं भेद
  - काव्य के भेद
    - कविता के सौन्दर्य–तत्त्व
    - काव्य का स्वरूप
    - बाह्य स्वरूप
    - आन्तरिक स्वरूप
- रस
- छन्द विवेचन
  - छन्द के प्रमुख अंग
    - काव्य में छन्द का महत्त्व
    - छन्द के प्रकार एवम् उनके भेद
    - कवित्त
  - कक्षा–11 अन्तरा भाग–एक
  - कक्षा–10
  - कक्षा–नवम्
- अलंकार परिचय
  - क्षितिज ;भाग–2. से–
  - क्षितिज ;भाग–2. से
  - वसंत ;भाग–2. से–
  - अलंकार कक्षा–ग्यारहवीं, बारहवीं
  - अलंकार के भेद
  - पाठ्य पुस्तक ;बारहवीं.–;अंतरा–भाग–2.
  - अंतरा ;भाग–2. से–
  - अंतरा ;भाग–1.–
  - अंतरा ;भाग–2.–
  - अंतरा ;भाग–1.–
  - अंतरा ;भाग–2.–
  - अंतरा ;भाग–1. से–
  - अंतरा ;भाग–1. से–
  - अंतरा ;भाग–2. से–
  - अंतरा ;भाग–1. से–
  - अंतरा ;भाग–2. से–
  - अंतरा भाग–1 से–
  - अंतरा भाग–2 से–
  - अंतरा ;भाग–1. से–
  - अंतरा ;भाग–2. से–
  - अंतरा भाग–1–
  - अंतरा भाग–2–
  - अंतरा ;भाग–1. से–
  - अंतरा ;भाग–2. से–
- बिम्ब
  - अन्तरा भाग–दो में संकलित महत्त्वपूर्ण कविताओं में दृष्टव्य बिम्ब–विधान
    - जयशंकर प्रसाद
    - देवसेना का गीत
    - कार्नेलिया का गीत
    - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
    - सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'
    - केदारनाथ सिंह
    - जायसी
    - केशव
    - सूरदास पद–2
    - देव
    - पदमाकर
    - सुमित्रानन्दन पन्त
    - महादेवी वर्मा
    - नागार्जुन
    - धूमिल
    - देव
    - सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
    - नागार्जुन
    - मंगलेश डबराल
  - क्षितिज भाग–1
    - सुमित्रानंदन पन्त
    - केदारनाथ अग्रवाल
    - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
    - राजेश जोशी

अभ्यास–कार्य

कक्षा नवम्

एकादश कक्षा

द्वादश कक्षा

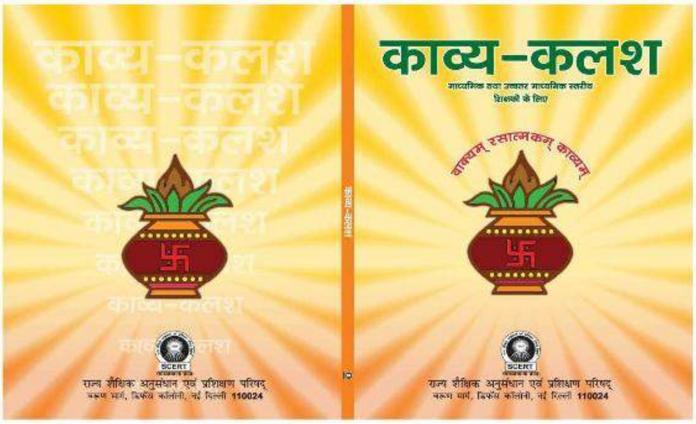

काव्य-कलश
माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरीय
शिक्षकों के लिए
वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्
SCERT
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024

काव्य–कलश

[माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरीय
शिक्षकों के लिए]

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

डॉ. रमाकांत शुक्ल

डॉ. रवि शर्मा
डॉ. मुकुल शर्मा

डॉ. प्रेमिला त्रिपाठी
प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, आनन्द विहार, दिल्ली

प्रवक्ता, राजकीय उ. मा. कन्या विद्यालय, नं. 1, सै. 4 अम्बेडकर नगर
डॉ. नीतू

डॉ. लीना सिन्हा
राजकीय उ. मा. कन्या विद्यालय, बदरपुर, नई दिल्ली

प्रवक्ता, राजकीय उ. मा. बाल विद्यालय, बदरपुर, नई दिल्ली

प्रवक्ता, राणा प्रताप उ. मा. बाल विद्यालय, रिठाला नई दिल्ली
श्री अविनाश शर्मा

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

मार्च – 2016
1300 ;प्रतियां.

मुख्य सलाहकार
अनीता सेतिया
निदेशक, राज्य. शै. अनु. प्र. परिषद्, नई दिल्ली

मार्गदर्शन
डॉ. प्रतिभा शर्मा
संयुक्त निदेशक, राज्य. शै. अनु. प्र. परिषद्, नई दिल्ली

शैक्षिक समन्वयक एवं संयोजिका
प्रमिला त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रवक्ता, राज्य. शै. अनु. प्र. परिषद्, नई दिल्ली

सेवानिवृत्त, रीडर दिल्ली विश्वविद्यालय,
प्रोफ़ेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रोफ़ेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय,
वरिष्ठ प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

प्रकाशन समूह
नवीन कुमार, राधा एवं जय भगवान

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
एजुकेशनल स्टोर्स, एस–5, बुलन्दशहर रोड, इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट–I, गाजियाबाद (उ.प्र.)

आमुख

काव्य के माध्यम से मानव भावानुभूति तथा रसानुभूति करता है। भारतीय इतिहास के आधार पर यह बात सर्वविदित है कि पूर्वकालीन सभी प्रकार के साहित्य-सृजन का मूल आधार कविता ही रही है। यहाँ तक कि धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, काव्यशास्त्र, खगोल शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र, शब्दकोश आदि ज्ञानविज्ञान के सभी विषयों का प्रतिपादन काव्यशैली में ही किया गया है। इसमें यह बात प्रमाणित होती है कि कविता मानव-मन के सर्वाधिक समीप है। कविता मनुष्य की भावनाओं और संवेदनाओं को एक नए रसोद्रेक के साथ आप्लावित करती है। कविता मानव-हृदय से निःसृत एक ऐसी भावशैली है जो मानव की कोमल भावनाओं को झकझोर कर कविता के तादात्म्य स्थापित कर साधारणीकरण तक पहुँचाती है। इसके साथ ही कविता में लोककल्याण और लोकरंजन का तत्त्व भी बड़ी सहजता और सुगमता के साथ सहृदय के मन का उदात्तीकरण करता है इसलिए कविता के पठन-पाठन तथा रसानुभूति के लिए काव्यांगों का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है।

"काव्य-कलश" नामक प्रस्तुत प्रशिक्षण-सामग्री की रचना-प्रेरणा के तीन प्रमुख उद्देश्य रहे हैं :

(i) शिक्षकों को काव्यशास्त्र सम्बन्धी अवधारणाओं से परिचित कराना तथा उसमें काव्य के कलापक्ष तथा भावपक्ष को समझने की अनुभूतिजन्य क्षमता उत्पन्न करना

(ii) शिक्षा विभाग की अपेक्षा के अनुरूप शिक्षकों की कविता-शिक्षण-प्रविधि में गुणवत्तापरक सुधार लाना

(iii) परीक्षा की दृष्टि से छात्रों की प्रदर्शन क्षमता का विकास कर उसे बेहतर बनाना।

प्रस्तुत पुस्तक में क्रमशः नवीं कक्षा से बारहवीं कक्षा तक की पाठ्यपुस्तकों 'क्षितिज' भाग-1, 2 तथा 'अंतरा' भाग-1, 2 को आधार बनाकर संकलित कविताओं से काव्य-तत्त्वों तथा काव्यांगों के उदाहरण देकर इसे प्रायोगिक रूप देने का प्रयास भी किया गया है।

आशा है, प्रस्तुत सामग्री द्वारा जहाँ एक ओर शिक्षकजनों के वैषयिक ज्ञान में वृद्धि होगी वहीं दूसरी ओर वे काव्यानुभूति द्वारा छात्रों को भी मर्मस्पर्शी स्थलों का बोध कराकर उन्हें काव्य-सृजन की ओर उत्प्रेरित कर सकेंगे।

सुधीजनों के रचनात्मक सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

–अनीता सेतिया

विषय–सूची

1. विषयानुप्रवेश 05
2. काव्य का स्वरूप एवं उसवेफ भेद 12
3. रस–विवेचन 20
4. छन्द–विवेचन 33
5. अलंकार–परिचय 75
6. बिम्ब 109

खविशेष–रस, छन्द, अलंकार एवं बिम्ब वेफ सै(ांतिक पक्ष एवं उनवेफ प्रायोगिक पक्षों को क्षितिज भाग–एक, क्षितिज भाग–दो एवं अन्तरा भाग–एक, अन्तरा भाग–दो में संकलित कविताओं वेफ सन्दर्भ में स्पष्ट किया गया है।,

1

विषयानुप्रवेश

ानव स्वभावतः संवेदनशील प्राणी है। वह अपनी अन्तः संवेदनाओं को अनुभूतियों को अभिव्यक्त करना चाहता है। अनुभूतियों को रोका नहीं जा सकता, वे मनुष्य वेफ अन्तःकरण में अभिव्यक्ति की अवुफलाहट

e

पैदा कर देती है। मानवीय अन्तःकरण में सघनतम हुई अनुभूतियां कायिक चेष्टाओं या वाचिक प्रयासों वेफ माध्यम से अभिव्यक्ति पाकर दूसरे लोगों तक पहुंचती है और उनको भी संवेदनात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। संवेदनाओं और अनुभूतियों का यही पारस्परिक संचरण जब भाषा वेफ माध्यम से क्रमब(, रुचिकर, ग्राह्य और प्रयोजन मूलक होकर किसी विशेष विधा वेफ रूप साकार रूप लेता है तो साहित्य या काव्य कहलाने लगता है। अतः साहित्य हमारी आत्मिक अनुभूति की अभिव्यक्ति है। साहित्य सहृदय में आनंद को उद्भाषित करता है। साहित्य मनुष्य वेफ स्थायी भावों में उत्प्रेरणा सृजित कर उसवेफ हृदय में रसात्मक अनुभूति पैदा करता है। व्यावहारिक रूप से साहित्य भाषा वेफ गद्यात्मक, पद्यात्मक या दोनों अर्थात गद्य और पद्य वेफ मिश्रित रूप में श्रव्य और दृश्य रूपों में विद्यमान रहता है। साहित्य या काव्य वेफ विषय में भारतीय वाघ्मय अनेकों काव्य– शास्त्रियों ने अनेक परिभाषाएं दी है। हमारा मन्तव्य यहाँ काव्य मीमांसा नहीं है वेफवल प्राथमिक परिचय हेतु वुफछ मत यहां उ(ृत हैं। मम्मट वेफ अनुसार ''दोष रहित, गुण सहित यथा संभव अलंकार युक्त शब्द तथा अर्थ को काव्य कहते हैं।'' पं. विश्वनाथ ''रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं।'' जगन्नाथ के मत में ''रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है।'' काव्य या साहित्य की परिभाषाएं चाहे जो भी रहे लेकिन साहित्य या काव्य लोकोत्तर आनंद की भाव सर्जना करता है। वह किसी विषय या बात को सरलतापूर्वक उसवेफ प्रयोजनानुसार कहने का भी बड़ा माध्यम है। काव्य का सृजन गद्य और पद्य वेफ आधार पर ही अधिक प्रचलित है। गद्य लेखन की दृष्टि से भारतेन्दु युग से उपरान्त हिन्दी साहित्य वेफ एक नयी क्रान्ति का सूत्रापात हुआ है। आज हिन्दी गद्य साहित्य पारम्परिक विधाओं से लेकर पाश्चात्य साहित्यानुकरण से आयतित कितनी नवीनतम विधाओं में विपुल मात्राा में लिखा जा रहा है। गद्य लेखन की सभी विधाएं विषय, योजना, उद्देश्य और भाषायी परिपक्वता वेफ साथ पूर्णतः सार्थक और रुचिकर शैली वेफ हिन्दी साहित्य वेफ कोष को सुसमृ(कर रही हैं। आज नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, रेखाचित्रा, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, डायरी, यात्राा–वृत्तांत, रिपोर्ताज, पफैन्टेसी, लघुकथाएं, पफीचर, स्तम्भ लेख, सम्पादकीय और ललित निबन्ध जैसी अनेक विधाओं में गद्य लेखन हो रहा है। गद्य लेखन की प्रत्येक विधा अपने में पूर्ण और रुचिकर है। इसी प्रकार पद्य अर्थात कविता में साहित्य–

सृजन वर्तमान में छन्दब(और छन्दमुक्त दोनों ही प्रकार वेफ रचना शिल्पों में जारी है। छन्दब(कविताएं लय, ताल और सरसता की दृष्टि से पाठक मन को अधिक रुचिकर लगती हैं और आनंद की रसात्मक अनुभूति की सहज अवतारणा करती हैं। लेकिन छन्द मुक्त कविताएं भी पाठक वेफ मन में सरसता वेफ साथ वैचारिक चिन्तन की यथार्थ मूलक स्थितियों का निर्माण करती हैं। छन्दमुक्त कविताओं में आनेवाली नई कविता बिम्बों और प्रतीकों वेफ माध्यम से पाठक मन में विषय को इस प्रकार प्रतिबिम्बित करती है कि उसे लगता है जैसे यह स्वयं ही कविता का अभिधेय बन गया हो। अर्थात वर्तमान में हिन्दी कविता चाहे वह महाकाव्य या प्रबंध काव्य वेफ रूप में पाठक वेफ समक्ष एक पूरे कथानक को प्रस्तुत करती हो या खण्ड काव्य वेफ रूप में पृथक्–पृथक् विषयों को मानवीय संवेदनाओं को प्रत्येक पंक्ति या पंक्तियों वेफ समूह रूप में स्वतन्त्रा रूप से अभिव्यक्त करता है। काव्य वेफ अंगों या उपांगों की विशद चर्चा यहां अभीष्ट नहीं है। लेकिन रस, छन्द अलंकार, बिम्ब विधान तथा प्रतीको की संक्षिप्त सी चर्चा कर हम अपने शिक्षकों में पुनरावृत्ति से पुनः स्मृति की ताजगी देना चाहते हैं। हालांकि हमारा शिक्षक बहुत गहनता से काव्य वेफ अंगों और उपांगों को भलीभांति जानता है लेकिन हमारा यह प्रयास एक पुनरावृत्ति का अभ्यास मात्रा है। साहित्य मनीषियों में वर्तमान में रसों वेफ स्थान पर वात्सल्य और भक्ति दो रसो की अवधारण को मान्य ठहरा दिया है। अतः अब हम वात्सल्य और भक्ति को भी पृथक रस वेफ रूप में मान्यता देने लगे हैं। हमारा कोई आग्रह न हो यदि श्रृंगार रस में ही वात्सल्य और भक्ति को समाहित कर कोई मनीषी को रसों को ही अंगीकार करते हों तो वे अपने निर्णय वेफ साथ स्वतंत्रा हैं। रस की उत्पत्ति करते हों तो वे अपने निर्णय वेफ साथ स्वतन्त्रा हैं। रस की उत्पत्ति या निष्पत्ति सहृदय में स्थायी भावों वेफ उद्दीपन से ही संभव है। अतः यहाँ रस और उसवेफ स्थायी भाव की सूची दी जा रही है। नाम रस स्थायी भाव

1.	श्रृंगार रस	रति ;अनुवफल वस्तु में मन का अनुराग या प्रेम.
2.	करुण रस	शोक ;प्रिय वस्तु की हानि से चित्त में विकलता.
3.	शान्त रस	निर्वेद ;तत्त्वज्ञान में सांसारिक विषयों वेफ प्रति वैराग्य/उदासीनता.
4.	हास्य रस	हास ;वेश, वाणी या चेष्टा आदि को विकृति से उत्पन्न उल्लास.
5.	वीर रस	उत्साह ;कार्यारम्भ वेफ लिए दृढ़–उद्यम या संकल्प भाव.
6.	अद्भुत रस	विस्मय ;अलौकिक या असाधारण वस्तु जनित आश्चर्य/कौतूहल.
7.	रौद्र रस	क्रोध ;प्रतिवूफल वेफ प्रति चित्त की उग्रता.
8.	वीभत्स रस	जुगुप्सा ;दोष युक्त वस्तु से जनित घृणा.
9.	भयानक रस	भय ;उग्र वस्तु जनित चित्त की व्यावुफलता.
10.	वात्सल्य	वत्सलता ;सन्तान या प्रियजन की चेष्टाओं से उत्पन्न प्रेम भाव.
11.	भक्ति	श्र(ा ;इष्ट वेफ प्रति कृतज्ञता जनित समर्पण–सेवा आदि भाव.

रस वेफ अन्य अंगों का विस्तार प्रस्तुत पुस्तिका के अंदर उल्लेखित है। साहित्य में दूसरा स्थान शब्द की शक्तियों का है। क्योंकि ध्वनियों वेफ समूह से शब्द का निर्माण होता है और उससे ध्वनित वाला बोध हमे शब्द वेफ तात्पर्य से अवगत कराता है। अतः शब्द बोधक है और अर्थ बोध्य है। लेकिन भाषा में या साहित्य में शब्द वेफ अंदर अनेक अर्थ सन्निहित रहते हैं। शब्द का अर्थ देश, काल परिस्थिति वेफ साथ–साथ वक्ता की प्रस्तुति, श्रोता की स्थिति और संदर्भों व प्रसंगों की अवतारणा से भी सम्बन्धित रहती है। काव्य शास्त्रियों ने शब्द शक्तियों का निम्न प्रकार निरूपण किया है। शब्द शक्ति नाम शब्द अर्थ

अभिधा वाचक वाच्य ;अभिधेय. मूल प्रातिपदिक अर्थ

लक्षणा लक्षक लक्ष्य ;रूठ अथवा प्रयोजन वेफ आधार ग्राहन अर्थ.

व्यंजना व्यंजक व्यंग्य ;शब्द और अर्थ से व्यंजित होने वाला अर्थ.अभिधा–शब्द वेफ साथ संयुक्त लोक–प्रसि(अर्थ का बोध कराने वाली शब्द की वृत्ति या शक्ति को अभिधा शब्द–शक्ति कहते हैं। जैसे कमल, कहने पर एक पफूल विशेष का, चन्द्रमा कहने पर एक आकाश में चमकने वाले ग्रह पिण्ड का बिम्ब मन में उपस्थित हो जाता है। लक्षणा–जब शब्द का मुख्यार्थ बाधित होकर रूढ़ि अथवा प्रयोजन विशेष वेफ कारण मुख्यार्थ से सम्बन्धित किसी अन्य गौण अर्थ की प्रतीति होने लगती है वहाँ लक्षणा शब्द–शक्ति होती है। जैसे यदि अमुक नाम वेफ व्यक्ति को हम गाय, गधा, बैल, हाथी या शेर की संज्ञा से पुकारते है या कहते है तो वहाँ अमुक पशु नाम वेफ स्थान पर उस पशु वेफ लक्षणों का अर्थात पशुत्व का बोध उस अर्थ में सप्रयोजन होने लगता है। यही अर्थ वेफ साथ प्रतीत होने वाली लाक्षणिकता ही लक्षणा शब्द शक्ति है। व्यंजना–जब शब्द का मुख्यार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों ही बाधित होकर किसी अन्य अर्थ को ध्वनित करते हो तो वह ध्वन्यार्थ ही व्यंजना कहलाता है। व्यंजना शब्द और अर्थ दोनों में ही निहित रहती है। जैसे हम किसी व्यक्ति से पूछे कि अमुक स्त्राी से तुम्हारा क्या संबंध है और वह कहे वुफछ नहीं लेकिन उसका कहने का तरीका उसकी चितवन, उसका मुसवुफराना आदि स्पष्ट कर देता है कि उसवेफ सम्बन्धों में आत्मीयता और प्रेम निहित है। कथन में आत्मीयता और प्रेम का ध्वनित होना ही व्यंजना शब्द शक्ति है। यह शब्दी व्यंजना और आर्थी व्यंजना दो प्रकार की होती है। यहां संक्षिप्त विवरण वेफवल शब्द की वृत्तियों या उसकी शक्तियों को प्राथमिक दृष्टि से समझना मात्रा था। अधिक विस्तार का यह अवसर नहीं है। साहित्य में रस और शब्द शक्तियों की प्रासंगिकता गद्य और पद्य दोनों में ही होती है। लेकिन कविता में इन दोनों वेफ अतिरिक्त अलंकार, छन्द और बिम्ब का प्रयोग उसमें विशिष्टता लाता है। हालांकि हमने पाठय क्रम में संकलित कविताओं को आधार मान कर अलंकार छन्द, बिम्ब और रस की विवेचना की हैं। लेकिन विषय में सहज प्रवेश की दृष्टि से संक्षिप्त सा परिचय यहाँ उल्लेखित है। अलंकार–मनुष्य सौंदर्य प्रेमी है। वह अपनी प्रत्येक वस्तु को सुसज्जित और अलंकृत देखना चाहता है।

वह अपने कथन को भी शब्दों वेफ सुंदर प्रयोग और उसकी विशिष्ट अर्थवत्ता से प्रभावी व सुंदर बनाना चाहता है। मनुष्य की यही प्रवृत्ति काव्य में अलंकार कहलाती है। ''काव्यशोभा करान धर्मानलंकारान प्रचक्षते।'' अर्थात वे कारक जो काव्य की शोभा बढ़ाते हैं अलंकार कहलाते हैं। अलंकारों वेफ भेद और उपभेद की संख्या काव्यशास्त्रियों वेफ अनुसार सैंकड़ों है। लेकिन पाठयक्रम और छात्रा स्तर वेफ अनुरूप यहाँ वुफछ मुख्य अलंकारों का परिचय व प्रयोग ही अपेक्षित है। 1. शब्दालंकार–जहाँ काव्य में शब्दों वेफ प्रयोग वैशिष्टय से कविता में सौंदर्य और चमत्कार उत्पन्न होता है वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे–''कनक–कनक ने सो गुनी मादकता अधिकाय'' यहाँ कनक शब्द की आवृत्ति में ही चत्मकार निहित है। शब्दालंकार के भेद

1. अनुप्रास अलंकार–वर्णो की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं। वर्णों की आवृत्ति वेफ आधार पर वृत्यानुप्रास, छेकानुप्रास, लाटानुप्रास, श्रत्यानुप्रास और अन्त्यानुप्रास आदि इसवेफ मुख्य भेद होते हैं।

2. यमक–यमक एक ही शब्द की आवृत्ति दो या उससे अधिक बार होती है लेकिन अर्थ उनवेफ भिन्न–भिन्न होते हैं।

3. श्लेष अलंकार–एक ही शब्द वेफ जब कई अर्थ निकलते हैं तो वहाँ श्लेषालंकार होता है। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि यमक वेफ शब्द आवृत्ति होती है और एकाधिक अर्थ होते हैं जबकि श्लेष में बिना शब्द की आवृत्ति ही शब्द वेफ एकाधिक अर्थ होते हैं। अर्थालंकार–जहाँ कविता में सौंदर्य और विशिष्टता अर्थ में निहित हो वहाँ अर्थालंकार होता है। इसवेफ मुख्य भेद निम्नवत है।

1. उपमा–जहाँ किसी वस्तु की तुलना सामान्य गुण धर्म वेफ आधार पर वाचक शब्दों से अभिव्यक्त होकर किसी अन्य वस्तु से की जाती है उपमा अलंकार होता है। जैसे–'पीपर पात सरिस मन मोरा डोला'।

2. रूपक–जहाँ उपमेय और उपमान अभिन्नता हो और वे एक रूप दिखाई दे। जैसे–'चरण कमल बन्दौ हरिराई।'

3. उत्प्रेक्षा–जहाँ प्रस्तुत उपमेय वेफ अप्रस्तुत उपमान की संभावना व्यक्ति की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। ''वृक्ष ताड़ का बढ़ता जाता मानो नभ को छूना चाहता।''

4. भ्रान्तिमान–जहाँ समानता वेफ कारण उपमेय में उपमान की निश्चयात्मक प्रतीति हो और वह क्रियात्मक परिस्थिति में परिवर्तित हो जाए।

5. सन्देह–यहाँ उसी वस्तु वेफ समान दूसरी वस्तु की सन्देह हो जाए लेकिन वह निश्चिात्मक ज्ञान में न बदले, वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

6. अव्योक्ति अलंकार–जहाँ प्रस्तुत वस्तु का वर्णन कर उसवेफ माध्य से किसी अप्रस्तुत वस्तु को व्यंजना की जाती है वहाँ अव्योक्ति अलंकार होता है।

7. विभावना अलंकार–जहाँ कारण वेफ अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन किया जाता है, विभावना अलंकार होता है।
जैसे–'चुभते ही तेरा अरुण बान। कहते कन–कन से पफूट–पफूट, मधु वेफ निर्झर वेफ सजल गान।

8. मानवीकरण–जहाँ अमूर्त या मूर्त वस्तुओं का वर्णन सजीव प्राणियों या मनुष्यों की क्रियाशीलता की भांति वर्णित किया जाए वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। अर्थात निर्जीव में सजीव वेफ गुणों का आरोपण होता है।

9. अतिश्योक्ति–जहाँ किसी वस्तु या उपमेय का वर्णन बढ़ा–चढ़ाकर किया जाए वहाँ अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

हनुमान की पूँछ में लगि न पाई आगि, लंका सिगरी जर गई, गए निसाचर भागि। छन्द–छन्द कविता की स्वाभाविक गति वेफ नियम ब(रूप है। छन्द कविता वेफ लय, प्रवाह और संगीतात्मक उत्पन्न कहते हैं। छन्दों का निर्धारण मात्राओं या वर्णों की गणना वेफ आधार पर किया जाता है। इन्हीं वेफ आधार पर कविता में यति, विराम और उसकी पाठ गीत का निर्धारण भी होता है। छन्द से कविता वेफ शिल्प सौष्ठव में चमत्कारिता जाती है और पाठक या श्रोता में वह अभिरुचि पैदा करता है। छन्द दो प्रकार वेफ होते हैं–1. मात्रिाक छन्द, 2. वर्णिक छन्द। दोनों ही प्रकार वेफ छन्दों की सै(ान्तिक समीक्षा पुस्तक वेफ अन्दर छन्द विधान निरूपण वेफ अर्न्तगत् की गई है। यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक है कि आधुनिक समय की हिन्दी कविता अधिकांशतः छन्द मुक्त कविता है। वर्तमान हिन्दी कविता पर पाश्चात्य कविता का प्रभाव भी बहुत अधिक है। लेकिन आधुनिक कविता छन्द मुक्त होकर भी काव्य वेफ अन्य मौलिक अंगों रस, अलंकार, गुण, रीति आदि वेफ साथ अपनी पूर्ण अर्थवत्ता वेफ साथ साहित्यिक मूल्यों को पूरा करती हुई आगे बढ़ रही है। यहाँ हमने गुणों और रीतियों की चर्चा भी की है। संक्षेपतः काव्य में तीन रीतियाँ प्रचलित हैं। 1. वैदर्भी रीति, 2. गौडी रीति, 3. पांचाली रीति। काव्य मीमांसकों ने कविता में इनकी उपादेयता अनेक प्रकार से बताई है। कविता या काव्य में गुण भी तीन ही होते है। इसवेफ नित्य धर्म को गुण कहते हैं। इसवेफ अनुरूप ही गुण का निर्धारण होता है।

;1द्ध माधुर्यगुण–जब कविता या काव्य को पढ़कर या सनुकर पाठक या श्रोता का हृदय आनंद से द्रवित हो जाए। वह माधुर्य गुण कहलाता है। माधुर्य गुण युक्त काव्य में समास, संयुक्ताक्षरो और 2 वर्ण वेफ अक्षरों से प्रायः दूरी रखी जाती है।

;2द्ध ओज गुण–जब पाठय या श्रोता वेफ मन में काव्य या कविता को पढ़कर या सुनकर जोश उत्साह उत्पन्न होने लगता है। वहाँ ओज गुण कहलाता है। इसमें समासिक शब्दों का बहुलता प्रयोग होता है तथा रेपफ व संयुक्ताक्षरों का भी अधिक प्रयोग होता है।

;3द्ध प्रसाद गुण–वह सहज सरल काव्य रचना जिसे पढ़कर या सुनकर पाठक या श्रोता का मन प्रसन्नता से भर जाए। चित्त में नया आह्लाद भाव उत्पन्न हो जाए। वहाँ प्रसाद गुण होता है।

बिम्ब–बिम्ब किसी पदार्थ का मानचित्रा या मानसी चित्रा होता है। पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों ने बिम्ब को कविता का अनिवार्य अंग माना है। बिम्ब शब्दों द्वारा चित्रित किए जाने वाला वह न्यूनाध्कि संवेदनात्मक चित्रा है, जो अंशतः रूपात्मक होता है और अपने संदर्भ में मानवीय संवेदनाओं से संबंधित रहता है किन्तु वह कवि की भावना या उसवेफ आवेग को पाठक तक पहुँचाता है। चित्रामयता वर्तमान कविता की अनिवार्यता है। क्योंकि चित्रात्मक स्थितियों का पाठक चाक्षुष अनुभव कर पाता है। कविता में बिम्ब वेफ प्रयोग से पाठक या श्रोता कविता को इन्द्रिय बोध और मानसिक बोध दोनों ही प्रकार से सुगमता से आत्मसात कर लेता है। छायावादी कविता और आधुनिक कविता ने बिम्बों को स्वीकार किया इसलिए ये कविताएँ छन्द मुक्त होकर भी पाठक को संवेदनाओं वेफ अधिक निकट ठहरती हैं। शिक्षक और छात्रा पाठ्य पुस्तकों में संकलित कविताओं वेफ माध्यम से बिम्बों की महत्ता का स्वयं अनुभव करेंगे। बिम्बों का वर्गीकरण बहुत जटिल है लेकिन हमने अधिक जटिलताओं से बचते हुए उसवेफ दो मौलिक वर्गों पर ही अपना विहंगपात सीमित कर लिया है। ;अ. शु(इन्द्रिय बोध गम्य बिम्ब–1. चाक्षुष बिम्ब, 2. नाद बिम्ब, 3. गन्ध बिम्ब, 4. स्वाद बिम्ब, 5. स्पर्श बिम्ब। पांचों ज्ञानेन्द्रियों वेफ विषयों से संबंधित बिम्ब इन्द्रिय बोध गम्य बिम्ब कहलाते हैं। उदाहरण– नत नयन, करवेफ वुफसुम जयमाल ले, भाल में कौमार्य की वेदी दिये। क्षितिज पर आकर खड़ी होती उषा, नित्य किस सौभाग्यशाली वेफ लिए।। ;आ. मिश्रित इन्द्रिय बोध वेफ आधार पर यह संवेदनात्मक बिम्ब–1. मानस बिम्ब, 2. स्रोत वैभिन्नयगत बिम्ब–;अ. धार्मिक एवं पौराणिक बिम्ब, ;ब. तन्त्राों से गृहीत बिम्ब, ;स. महाकाव्यों से गृहीत बिम्ब, ;द. ऐतिहासिक स्रोतों से गृहीत बिम्ब।

युधिष्ठिर! दुताशन–शैल सहसा पफूटता है? कभी क्या वज्र निर्धन व्योम से छूटता है?

अमल गिरि पफूटता, जब ताप होता है अवनि में, कड़कती दामिनि विकराल धूमावुफल गमन में। पाठ्यक्रम वेफ आधार पर अधिक विवरण आपको पुस्तक में उपलब्ध होगा। अतः यहां संक्षिप्त–सा विवरण ही पर्याप्त है। प्रतीक विधान–काव्य में चिन्तन का बड़ा महत्त्व है। प्रतीक का सम्बन्ध भी मनुष्य की चिन्तन प्रणाली से है। प्रतीक का शाब्दिक अर्थ अवयव या चिह्न होता है। कविता में प्रतीक हमारी भाव–सत्ता को प्रकट अथवा गोपन करने का माध्यम है। प्रतीक भाव व्यंजना की विशिष्ट प्रणाली है, इससे सूक्ष्म अर्थ व्यंजित होता है। डा. भगीरथ मिश्र कहते है कि ''सादृश्य वेफ अभेदत्व का घनीभूत रूप ही प्रतीक है। उनवेफ मन्तव्य में प्रतीक की सृष्टि अप्रस्तुत बिम्ब द्वारा ही संभव है। प्रतीक वेफ वुफछ मौलिक गुण–धर्म है जैसे सांवेफतिकता,

संक्षिप्तता, रहस्यात्मकता, बौ(िकता, भावप्रकाश्यता एवं प्रत्यक्षतः प्रकटीकरण से बचाव आदि। आधुनिक कविता प्रतीक वेफ उक्त सामान्य लक्षणों को अपने अन्दर समाहित कर पाठक को विषय की समझने, अनुभव करने और अर्थ में संबोध का व्यापक विकल्प प्रस्तुत करती है। आज कविता कबीर, सूर, तुलसी की भांति निश्चित अर्थों में बाँधती नहीं हैं बल्कि उसे उसकी भाव सत्ता वेफ सोचने समझने की खूली छूट देती है और इसमें प्रतीकों का बहुत बड़ा योगदान परिलक्षित होता है। पुनश्च, हमारी चिन्ता अति विस्तार से बचने की है, अतः हम वेफवल प्रतीकों का वर्गीकरण मात्रा ही प्रस्तुत कर रहे हैं। हालांकि काव्य मनीषियों ने प्रतीकों वेफ अनेक वर्गीकरण किए है लेकिन हम चार वर्गीकरण ाें वेफ ही समस्त प्रतीकों को समाहित मान कर उन्हें उ(ृत कर रहे हैं।

1. रूपात्मक प्रतीक 2. गुणभाव–स्वभावात्मक प्रतीक 3. क्रियात्मक प्रतीक 4. मिश्र प्रतीक

वुफछ विद्वानों ने रूढ़ प्रतीक तथा सक्रिय प्रतीक वेफ रूप में भी वर्गीकरण किया है। लेकिन यहाँ हमारा अभीष्ट वेफवल काव्य में प्रतीकों वेफ महत्त्व पर प्रकाश डालना था। उदाहरण से प्रतीकों का महत्त्व देखें।

;1द्ध दहक रही मिट्टी स्वदेश की, खौल रहा गंगा का पानी	;2द्ध हिटलर हारेगा, गांधी जीतेंगे।	;3द्ध दुनिया वेफ 'नीरो' सावधान!	;4द्ध झकझोरो झकझोरो महान सुप्त को, टेरो, टेरो चाणक्य चन्द्रगुप्तों को। विक्रम
प्राचीरों वेफ गाज रही, जंजीरों से कसी जमानी	लड़ाई अब और नहीं ठनेगी।	दुनिया वेफ पापी जार सजग।	तेज, असि की उद्दाय प्रभा को, राणाप्रताप, गोविंद शिवा सरजा को।।

उपरोक्त विषयानुप्रवेश वेफ माध्यम से काव्य वेफ मौलिक तत्वों पर एक विहंगमपात किया गया है। आशा करते हैं कि शिक्षकों और छात्राों को काव्य को समझने, उसवेफ स्वरूप को जानने और उसवेफ सृजन की पृष्ठभूमि को समझने में किंचित सुविधा अवश्य मिलेगी।

2

काव्य का स्वरूप एवं भेद

ाषा वेफ माध्यम से जीवन की मार्मिक अनुभूतियों की कलात्मक अभिव्यक्ति को साहित्य कहा जाता है। साहित्य को मनोवेगों की सृष्टि भी माना जा सकता है। उसमें सहितत्त्वत्रः अर्थात् सहिस्तस्य भावः साहित्यम्त्रः का समावेश होता है। सामान्यतया यह अभिव्यंजना हमें गद्य और पद्य दो रूपों में मिलती है। पद्य को गद्य का प्रतिपक्षी रूप कहा जाता है और यह छन्दोब(रचना वेफ लिए ही प्रयुक्त होता है। गद्य और कविता का अन्तर छन्द, लय और तुक वेफ आधार पर किया जाता है। कविता प्रायः पद्यात्मक ओर छन्दब(होती है। चिन्तन की अपेक्षा इसमें भावनाओं की प्रधानता होती है। इसका उद्देश्य सौंदर्य की अनुभूति द्वारा आनन्द की प्राप्ति करना होता है। कविता को गद्य से ऊँची स्थिति प्राप्त है क्योंकि इसमें रचना वेफ अन्तः सौंदर्य का बोध होता है। इस प्रकार काव्य ;यहाँ पर काव्य का अर्थ कविता है. उस छन्दोब(एवं लयात्मक साहित्यिक रचना को कहते हैं, जो श्रोता या पाठक वेफ मन में भावात्मक आनंद की सृष्टि करती है। अपने व्यापक अर्थ में 'काव्य' से सम्पूर्ण गद्य एवं पद्य में रचित भावात्मक सामग्री का बोध होता हैत्रः किन्तु संवुफचित अर्थ में इसे कविता का पर्याय ही समझा जाता है। वेफवल लय एवं तुक वेफ आधार पर गद्य एवं पद्य का अन्तर एक सीमा तक ही सच माना जा सकता है। कभी–कभी गद्य में भी कविता वेफ गुण दृष्टिगोचर होते हैं तो दूसरी भ

ओर लय और तुक वेफ अभाव में छन्दोब(रचना भी नीरस प्रतीत होती है। कविता का आस्वादन उसवेफ अर्थ–ग्रहण करने में निहित है। इसवेफ लिए पहले कविता–पंक्तियों का मुख्यार्थ समझना आवश्यक है। मुख्यार्थ समझने वेफ लिए अन्वय करना आवश्यक होता हैत्रः क्योंकि कविता की वाक्य–संरचना में प्रायः शब्दों का वह क्रम नहीं रहता, जो गद्य में होता है। अतः अन्वय से शब्दों का परस्पर सम्बन्ध व्यक्त हो जाता है, जिससे अर्थ स्पष्ट हो जाता है। इस प्रक्रिया में शब्द वेफ वाच्यार्थ वेफ साथ–साथ उसमें निहित लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ भी स्पष्ट हो जाते हैं। कवि कभी–कभी कविता में ऐसे शब्दों का भी साभिप्राय प्रयोग करता है, जिसवेफ स्थान पर उनवेफ पर्याय नहीं रखे जा सकते। कभी–कभी एक शब्द वेफ एकाधिक अर्थ होते हैं और सभी उस प्रसंग में लागू होते हैं। कभी एक ही शब्द अलग–अलग अर्थों में एकाधिक बार प्रयुक्त होता है, कभी विरोधी शब्दों का प्रयोग भाव–वृ(वेफ लिए किया जाता है और कभी एक ही प्रसंग वेफ कई शब्द एक साथ आ जाते हैं। इस प्रकार वेफ शब्दों की ओर ध्यान देना चाहिए और उनवेफ अपेक्षित अर्थ जानने वेफ प्रयास करने चाहिए।

काव्य के भेद

काव्य वेफ मुख्यतः दो भेद होते हैं–श्रव्य काव्य और दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य वह काव्य है, जो कानों से सुना अथवा मुख से पढ़ा जाता है। दृश्य काव्य वह काव्य है, जो अभिनय वेफ माध्यम से देखा–सुना जाता हैऋ जैसे–नाटक, एकांकी आदि। श्रव्य काव्य वेफ दो भेद होते हैं–प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य में कोई धारावाहिक कथा होती है, अर्थात् किसी कथायुक्त काव्य को प्रबन्ध काव्य कहा जाता है। इसमें किसी घटना अथवा क्रिया का वर्णन काव्यात्मक रूप में होता है। जयशंकर प्रसाद की रचना 'कामायनी' को इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। प्रबन्ध काव्य वेफ अन्तर्गत महाकाव्य, खण्डकाव्य और आख्यानक गीतियाँ आती हैं। महाकाव्य–प्राचीन आचार्यों वेफ अनुसार, महाकाव्य में जीवन का व्यापक रूप में चित्राण होता है। इसकी कथा इतिहासप्रसि(होती है। इसका नायक उदात्त और महान् चरित्रा वाला होता है। इसमें वीर, शृंगार और शान्त रस में से कोई एक रस प्रधान तथा शेष रस गौण होते हैं। यह प्रायः लम्बे कथानक पर आधारित तथा सर्गब(होता है। इसमें कम–से–कम आठ सर्ग होता हैं। महाकाव्य की कथा में धारावाहिकता तथा हृदय को भाव–विभोर करने वाले मार्मिक प्रसंगां का समावेश भी होना चाहिए। आधुनिक युग में महाकाव्य वेफ प्राचीन प्रतिमानों में परिवर्तन हुए हैं। इतिहास वेफ स्थान पर मानव–जीवन की कोई भी घटना तथा समस्या, इसका विषय हो सकती है और महान् पुरुष वेफ स्थान पर समाज का कोई भी व्यक्ति इसका नायक हो सकता है, परन्तु उस पात्रा में लोकादर्श की क्षमता का होना अनिवार्य है। हिन्दी वेफ वुफछ प्रसि(महाकाव्य हैं–'पद्मावत', 'श्रीरामचरितमानस', 'सावेफत', 'प्रियप्रवास', 'कामायनी', 'उर्वशी',

'लोकायतन' आदि।

खण्डकाव्य–खण्डकाव्य में किसी लोक–नायक वेफ जीवन वेफ व्यापक चित्राण वेफ स्थान पर उसवेफ जीवन वेफ किसी एक पक्ष अथवा रूप का संक्षिप्त चित्राण होता है। इसे महाकाव्य का लघु रूप अथवा एक सर्ग नहीं समझना चाहिए। खण्डकाव्य में अपनी पूर्णता होती है और सम्पूर्ण रचना में प्रायः एक ही छन्द प्रयुक्त होता है। 'पंचवटी', 'जयद्रथ–वध', 'नहुष', 'सुदामाचरित', 'पथिक', 'गंगावतरण', 'हल्दीघाटी' आदि हिन्दी वेफ वुफछ प्रसि(खण्डकाव्य हैं। आख्यानक गीतियाँ–महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न पद्यब(कहानी का नाम आख्यानक गीति है। इसमें वीरता साहस, पराक्रम, बलिदान, प्रेम, करुणा आदि वेफ प्रेरक घटना–चित्राों वेफ माध्यम से कथा कही जाती है। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और रोमांचक होती है। गीतात्मकता और नाटकीयता इसकी विशेषताएँ हैं। 'झाँसी की रानी', 'रंग में भंग', 'विकट भट' आदि रचनाएँ आख्यानक गीतियों वेफ अन्तर्गत् आती हैं। मुक्तक काव्य–मुक्तक काव्य महाकाव्य और खण्डकाव्य से भिन्न प्रकार का होता है। उसमें एक अनुभूति, एक भाव या कल्पना का चित्राण होता है। महाकाव्य या खण्डकाव्य जैसी धारावाहिकता न होने पर भी इनका वर्ण्य–विषय अपने में पूर्ण होता है। इनवेफ पदों का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं होताऋ प्रत्येक पद

या छन्द स्वतन्त्रा होता हैऋ जैसे–बिहारी और रहीम वेफ दोहे तथा सूर और मीरा वेफ पद। मुक्त रचनाओं को भी दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–पाठ्य मुक्तक तथा गेय मुक्तक। पाठ्य मुक्तक–पाठ्य मुक्तक रचनाओं में विषय की प्रधानता होती है। इनमें विभिन्न विषयों पर लिखी गयी छोटी–छोटी विचार–प्रधान रचनाएँ होती हैं, जिनमें किसी प्रसंग को लेकर भावानुभूति का चित्राण होता है अथवा किसी विचार या रीति का वर्णन किया जाता है। 'तार सप्तक' की रचनाएँ, सुमित्राानन्दन पन्त की 'पतझड़', सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी की 'भिक्षु', 'वह तोड़ती पत्थर' आदि रचनाएँ इसी वेफ अन्तर्गत् आती हैं। गेय मुक्तक–इसे गीति या प्रगीति काव्य भी कहते हैं। यह अंग्रेजी वेफ लिरिक का समानार्थी है। इसमें भावप्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, सौंदर्यमयी कल्पना, संक्षिप्तता, संगीतात्मकता की प्रधानता होती है। कबीर, तुलसी, रहीम वेफ भक्ति एवं नीति वेफ दोहे तथा बिहारी, मतिराम, देव आदि की रचनाएँ इसी कोटि में आती है।

कविता के सौन्दर्य–तत्त्व

कविता वेफ चार सौन्दर्य तत्त्व हैं–भाव–सौन्दर्य, विचार–सौन्दर्य, नाद–सौन्दर्य, और अप्रस्तुत–योजना का सौन्दर्य। इन्हें निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया गया है–

;1द्ध भाव–सौन्दर्य–प्रेम, करुणा, क्रोध, हर्ष, उत्साह आदि का विभिन्न परिस्थितियों में मर्मस्पर्शी चित्राण ही भाव–सौन्दर्य है। भाव–सौन्दर्य को ही साहित्यशास्त्रियों ने रस कहा है। प्राचीन आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना है। श्रृंगार, वीर, हास्य, करुण, रौद्र, शान्त, भयानक, अद्‌भुत तथा वीभत्स–नौ रस कविता में माने जाते हैं। परवर्ती आचार्यों ने वात्सल्य और भक्ति को भी अलग रस माना है। सूर वेफ बाल–वर्णन में

'वात्सल्य' का, गोपी–प्रेम में ' श्रृंगार' का, भूषण की 'शिवाबावनी' में 'वीर रस' का चित्राण है।

;2द्ध विचार–सौन्दर्य–विचारों की उच्चता से काव्य में गरिमा आती है। गरिमापूर्ण कविताएँ प्रेरणादायक भी सि(होती हैं। उत्तम विचारों एवं नैतिक मूल्यों वेफ कारण ही कबीर, रहीम, तुलसी और वृन्द वेफ नीतिपरक दोहे और गिरधर की वुफण्डलियाँ अमर हैं। इनसे जीवन की व्यावहारिक शिक्षा, अनुभव तथा प्रेरणा प्राप्त होती है।

आज की कविता में विचार–सौन्दर्य वेफ प्रचुर उदाहरण मिलते हैं। गुप्त जी की कविता में राष्ट्रीयता, देश–प्रेम आदि का विचार–सौन्दर्य है। 'दिनकर' वेफ काव्य में सत्य, अहिंसा और अन्य मानवीय मूल्य हैं। 'प्रसाद' की कविता में राष्ट्रीयता, संस्कृति और गौरवपूर्ण अतीत वेफ रूप में विचारों का सौन्दर्य देखा जा सकता है। आधुनिक प्रगतिवादी कवि जन–साधारण वेफ चित्राण, शोषितों एवं दीन–हीनों वेफ प्रति सहानुभूति, शोषकों वेफ प्रति विरोध आदि प्रगतिवादी विचारों का ही वर्णन करते हैं।

;3द्ध नाद–सौन्दर्य–कविता छन्दब(रचना है। छन्द नाद–सौन्दर्य की सृष्टि करता है। छन्द वेफ द्वारा ही कविता में लय, तुक, गति और प्रवाह का समावेश होता है। वर्ण और शब्द वेफ सार्थक और समुचित विन्यास

से कविता में नाद–सौन्दर्य और संगीतात्मकता आ जाती है तथा कविता का सौन्दर्य बढ़ जाता है। यह सौन्दर्य श्रोता और पाठक वेफ हृदय में आकर्षण पैदा करता है। वर्णों की बार–बार आवृत्ति तथा विभिन्न अर्थ वाले एक ही शब्द वेफ बार–बार प्रयोग से भी कविता में नाद–सौन्दर्य का समावेश होता हैऋ जैसे–

खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा।

किसलय का अंचल डोल रहा।।

यहाँ पक्षियों वेफ कलरव में नाद–सौंदर्य को देखा जा सकता है। कवि ने शब्दों वेफ माध्यम से नाद–सौंदर्य

वेफ साथ पक्षियों वेफ समुदाय और हिलते हुए पत्तों का चित्रा भी प्रस्तुत कर दिया है। 'धन घमंड नभ गरजत घोरा' अथवा 'कंकन किंकिनि नूपुर–धुनि सुनि' में मेघों का गर्जन–तर्जन तथा नूपुर की ध्वनि का सुमधुर स्वर है। इन दोनों ही स्थलों पर नाद–सौन्दर्य ने भाव को स्पष्ट भी किया है और नाद–बिम्ब को साकार कर भाव को गरिमा भी प्रदान की है। इसी प्रकार 'घनन घनन बज उठी गरज, तत्क्षण रणभेरी' में मानों रणभेरी प्रत्यक्ष ही बज उठी है। आदि, मध्य अथवा अन्त में तुकान्त शब्दों में प्रयोग से भी नाद–सौन्दर्य उत्पन्न होता हैऋ उदाहरणार्थ–

ढलमल ढलमल चंचल अंचल झलमल झलमल तारा।

इन पंक्तियों में नदी का कल–कल निनाद मुखरित हो उठा है। पदों की आवृत्ति से भी नाद–सौन्दर्य में वृ(होती हैऋ जैसे–

हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा, कहन सबैं लगीं।।

;4द्ध अप्रस्तुत योजना का सौन्दर्य–कवि विभिन्न दृश्यों, रूपों तथा तथ्यों का मर्मस्पर्शी और हृदयग्राही बनाने वेफ लिए अप्रस्तुतों का सहारा लेता है। अप्रस्तुत–योजना में यह आवश्यक है कि उपमेय वेफ लिए जिस उपमान की, प्रकृत वेफ लिए जिस अप्रकृत की और प्रस्तुत वेफ लिए जिस अप्रस्तुत की योजना की जाए, उसमें सादृश्य अवश्य हो। सादृश्य वेफ साथ–साथ उसमें जिस वस्तु, व्यापार और गुण वेफ सदृश वस्तु, व्यापार और गुण का समावेश किया जाये, वह उसवेफ भाव वेफ अनुवूफल हो। इन अप्रस्तुतों वेफ सहयोग से कवि भाव–सौन्दर्य की अनुभूति को सुलभ बनाता है। कवि कभी रूप–साम्य, कभी धर्म–साम्य और कभी प्रभाव–साम्य वेफ आधार पर दृश्य–बिम्ब उभारकर काव्य–सौन्दर्य को व्यंजित करता है।

काव्य का स्वरूप

कविता ;काव्य. वेफ वास्तविक स्वरूप को समझने वेफ लिए हम इसे दो उपशीर्षकों–बाह्य स्वरूप और आन्तरिक स्वरूप–में विभक्त करवेफ इसका विवेचन करेंगे।

बाह्य स्वरूप

कविता वेफ बाह्य स्वरूप वेफ अन्तर्गत् निम्नलिखित छः तत्त्वों का समावेश किया गया है–

;1द्ध लय–कविता वेफ बाह्य रूप में लय ही उसका सबसे प्रमुख तत्त्व है। लय ही हमारे जीवन का आधार है। प्रकृति वेफ हर कार्य मेंऋ जैसे–सूर्योदय, सूर्यास्त,)तुओं का आना–जाना आदि में भी लय वेफ दर्शन किये जा सकते हैं। भाषा वेफ प्रवाह में उतार–चढ़ाव होते रहते हैं और इन्हीं उतार–चढ़ावों वेफ परिणामस्वरूप लय का जन्म होता है। कविता में लय वेफ प्रयोग से विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है। यदि यह कहा जाये कि कविता का आनन्द एक सीमा तक लय पर ही निर्भर करता है, तो अतिश्योक्ति न होगी। शब्दों को एक विशेष क्रम–संयोजन प्रदान करने से कविता में स्वभावतः लय आ जाती है। उदाहरणार्थ–

;क. मेरो सब पुरुषारथ थाको।
बिपति–बँटावन बंधुबाहु बिनु करौं भरोसो काको?

;ख. नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग। खिला हो ज्यों बिजली का पफूल मेघ–बन बीच गुलाबी रंग।।

–'गीतावली' से

–'कामायनी' से

उपर्युक्त पंक्तियों में शब्द–संयोजन बहुत ही अच्छे ढंग से किया गया है। किसी भी शब्द का स्थान बदल देने से लय भंग हो जाती है। आधुनिक कविता तुकान्त नहीं होती, लेकिन उनमें भी शब्द और अर्थ वेफ आधार पर लय का ध्यान रख जाता है।

;2द्ध तुक–सामान्यतया आदिकाल से ही हिन्दी कविता तुकान्त होती आयी है। संस्कृत में कविता प्रायः अतुकान्त होती है। तुकान्त होने का कारण कविता में गेयता आ जाती है। आधुनिक हिन्दी कविता प्रायः अतुकान्त ही है। इस प्रकार यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि कविता का तुकान्त होना अनिवार्य नहीं है। इतना अवश्य है कि तुकान्त कविताऋ जैसे–दोहा, चौपाई, वुफण्डलिया, कवित्त, सवैया आदि को स्मरण करना आसान होता है।

;3द्ध छन्द–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छन्द को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''छन्द वास्तव में बँधी हुई लय वेफ भिन्न–भिन्न ढाँचों का योग है, जो एक निश्चित लम्बाई का होता है। लय, छन्द स्वर वेफ चढ़ाव–उतार, स्वर वेफ छोटे–छोटे ढाँचे ही हैं, जो किसी छन्द वेफ चरण वेफ भीतर न्यस्त रहे हैं।'' छन्दों का निर्धारण किसी एक पंक्ति या चरण में दिये गये वर्ण, शब्द, मात्राओं आदि वेफ आधार पर किया जाता है। मध्य युग तक की सम्पूर्ण हिन्दी कविता विभिन्न छन्दों में ही लिखी गयी है, जिनमें चौपाई, दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, वुफण्डलिया आदि प्रमुख आये हैं, जिससे प्राचीन छन्दों वेफ प्रयोग लगभग समाप्त हो गये हैंऋ तथापि आज की कविता में भी आवश्यकतानुसार छन्द बनाकर उनमें मात्राओं वेफ संयोजन की परिपाटी चल पड़ी है।

;4द्ध शब्द–योजना–कविता का सौन्दर्य उपयुक्त शब्द–चयन द्वारा ही निखरता है। यद्यपि साहित्य की हर विधा में उपयुक्त शब्द–चयन आवश्यक होता है, तथापि कविता में सही शब्द–संयोजन बहुत अधिक अनिवार्य है। भारतीय काव्यशास्त्रा में तीन शब्द–शक्तियों का निरूपण है–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना; अभिधा सामान्य अर्थ का, लक्षणा सम्बन्धित अर्थ का तथा व्यंजना दोनों ही अर्थों में विलक्षण अर्थ का बोध कराती है। व्यंजना की बहुलता से कविता में चार चाँद लग जाते हैं। कविता में नाद–सौन्दर्य शब्द–संयोजन पर ही निर्भर करता है। निम्नलिखित उदाहरण में शब्द–संयोजन का ही चमत्कार दृष्टिगोचर हो रहा है–

पपीहों की वह पीन पुकार। निर्झरों की भारी झरझर।।
झींगुरों की झीनी झनकार। घनों की गुरु गम्भीर गहर।। बिन्दुओं की छनती छनकार। दादुरों के वे दुहरे स्वर।। हृदय हरते थे विविध प्रकार। शैल पावस के प्रश्नोत्तर।। –सुमित्राानन्दन पन्त

;5द्ध चित्रात्मक भाषा–जनमानस में कविता की लोकप्रियता जिन कारणों से बढ़ी है उनमें एक कारण चित्रात्मक भाषा का प्रयोग भी है। चित्रात्मक भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि इसवेफ प्रयोग से थोड़े–से शब्दों में ही अधिक भावों का प्रकाशन किया जा सकता है। उदाहरणार्थ–

;क. मेरौ मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी, पिफरि जहाज पर आवै।।

;ख. कौन हो तुम वसंत के दूत बिरस पतझड़ में अति सुकुमारऋ
घन तिमिर में चपला की रेख तपन में शीतल मंद बयार।।

–सूरदास

–जयशंकर प्रसाद

;6द्ध अलंकार–अलंकारों की महिमा का वर्णन करते हुए आचार्यों ने कहा है कि अलंकार वेफ बिना कविता सम्भव ही नहीं है। वैसे तो अलंकार की कई परिभाषाएँ हो सकती हैं, लेकिन सर्वमान्य तथ्य यह है

कि जिस प्रयोग से अभिव्यक्ति में विशेष सौन्दर्य और अर्थवत्ता आ जाती है, उसे अलंकार कहते हैं। कवि कभी किसी बात को प्रत्यक्षतः न कहकर उसे घुमा–पिफराकर कहता है तो कभी साम्य स्थापित करता है। वह कभी तुलना करता है तो कभी भाव का अधिक उत्कर्ष देने वेफ लिए बात को बढ़ा–चढ़ा कर प्रस्तुत करता है। ये सब अलंकार वेफ ही भिन्न–भिन्न विधान हैं। अलंकार की सामान्यतया दो श्रेणियाँ–शब्दालंकार और अर्थालंकार–हैं। इन अलंकारों वेफ अनेक भेद व उपभेद हैं, जिनको निम्नवत् समझा जा सकता है– अप्रस्तुत वस्तु–योजना वेफ अलंकार–उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि। वाक्य–वक्रता वेफ अलंकार–व्याजस्तुति, समासोक्ति आदि। वर्ण–विन्यास वेफ अलंकार–अनुप्रास आदि।

आन्तरिक स्वरूप

कविता वेफ आन्तरिक तत्त्वोंवेफ माध्यम से ही कविता की आत्मा को समझा जा सकता है। वस्तुतः गद्य और पद्य में अन्तर उनवेफ बाहरी रूप वेफ कारण नहीं होता, वरन् यह भेद उनकी आत्मा में भिन्नता वेफ कारण होता है। इनमें अनुभूति और भावों की प्रमुखता का विशेष महत्त्व है। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

;1द्ध अनुभूति की तीव्रता–सामान्यतया यह सर्वमान्य उक्ति है कि गद्य का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है और काव्य का सम्बन्ध हृदय से। इस प्रकार का सम्बन्ध अनुभूति में तीव्रता वेफ कारण होता है। सामान्य जनों की अपेक्षा कवि बहुत अधिक संवेदनशील होता है। वाल्मीकि ने भी जब क्रौंच पक्षियों वेफ जोड़े में से

एक को मारे जाते हुए देखा था तो उनवेफ मुख से शिकारी वेफ प्रति शाप वेफ रूप में श्लोक ही पफूट पड़ा था। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि कविता हृदय की वस्तु है। सुमित्राानन्दन पन्त ने भी लिखा है–

> वियोगी होगा पहला कवि
> आह से उपजा होगा गान। उमड़कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान।।

जीवन वेफ सुख–दुःख वेफ प्रति कवि की प्रतिक्रिया कविता वेफ रूप में पफूट पड़ती है। कविता रचते समय जैसी अनुभूति कवि को होती है, वैसी ही अनुभूति वह पाठकों वेफ मन में भी जगाना चाहता है। इसमें सपफल कविता एक अच्छी कविता मानी जाती है।

;2द्ध अनुभूति की व्यापकता–प्रसि(उक्ति है ''जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।'' कहने का तात्पर्य यह है कि कविता में अनुभूति की तीव्रता वेफ साथ–साथ व्यापकता भी विद्यमान होती है। कई बार सामान्य जन वहाँ तक नहीं पहुँच पाते, जहाँ पर कवि का ध्यान पहुँच जाता है। ये वस्तुएँ, दृश्य या घटनाएँ कवि वेफ हृदय में जो भाव जाग्रत करते हैं, उसे ही अनुभूति की व्यापकता कहते हैं। कविता वेफ अध्ययन से हमें जीवन वेफ विविध पक्षों का ज्ञान होता है और जीवन वेफ इन विविध पक्षों का ज्ञान ही हमारी अनुभूति को व्यापक बनाता है।

;3द्ध कल्पनाशीलता–कविता कहने का ढंग वास्तव में कविता की संजीवनी शक्ति है, जो उसमें प्राण–संचार करती है। कविता की रचना करते समय वुफछ ऐसी शब्दावली का प्रयोग करते हैं, जो हमारी कल्पना–शक्ति को बढ़ाती हैं। प्राचीन आचार्यों वेफ अनुसार कवि की कथन शैली मन की आत्मिक शक्ति को स्वतः उद्बु करती है। विविध अलंकारों का सौन्दर्य कल्पना पर ही आधारित होता है, परन्तु यह बात विशेष

रूप से उल्लेखनीय है कि कल्पनाशीलता जब हृदय की अनुभूति पर आधारित होती है तब ही कविता सार्थक होती है। कल्पना कोरी कलाबाजी नहीं होनी चाहिए।

;4द्ध रसात्मकता और सौन्दर्यबोध–शब्द और अर्थ कविता वेफ शरीर हैं तो रस कविता का प्राण। रस को कविता की आत्मा भी कहा जाता है। कविता को पढ़ने पर जाग्रत होने वाली आनन्दमयी अनुभूति ही रस है। रसास्वादन ही कविता का परम ध्येय माना जाता है। कविता वेफ दो पक्ष होते हैं–भाव पक्ष एवं विभाव पक्ष। किसी वस्तु या व्यक्ति वेफ प्रति विशेष अवस्थाओं में जो मानसिक स्थिति होती है, उसे 'भाव' कहते हैं तथा जिस वस्तु या व्यक्ति वेफ प्रति वह भाव व्यक्ति होता है वह 'विभाव' कहलाता है। विभाव वेफ दो भेद होते हैं–आलम्बन और उद्दीपन।

भाव और विभाव की भाँति अनुभाव की भी एक स्थिति होती है। भाव, विभाव और अनुभाव वेफ पारस्परिक संयोजन से रस की उत्पत्ति होती है। कविता वेफ विषय की दृष्टि से रसों वेफ नौ भेद माने गये हैं, जिनमें वीर, शान्त, रौद्र, शृंगार, आदि प्रमुख रस हैं। जहाँ तक सौन्दर्यबोध का प्रश्न हैऋ कविता का अनुशीलन इस विषय में पर्याप्त सहायक सि(होता है। इस सन्दर्भ में प्रकृति–सौन्दर्य का उदाहरण लिया जा सकता है। प्रकृति–सौन्दर्य वेफ विषय में कोई कविता पढ़कर हमारा ध्यान प्रकृति वेफ छिपे हुए सौन्दर्य की ओर आकृष्ट होने लगता है। परिवर्तन संसार का नियम है। आधुनिक युग में व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ वुफछ इस प्रकार विकसित हुई हैं कि सौन्दर्य अब द्रष्टा की सौन्दर्यबोधक चेतना में अवस्थित माना जाता है, न कि किसी वस्तु या दृश्य में। यही कारण है कि आज का कवि छोटी और सुन्दर न दिखने वाली वस्तु में भी विराट वेफ दर्शन करता है। छिपकली, चूहे, चींटी, मकड़ी, धूल की ढेरी, सूखे घास–पफूस आदि पर भी आज का कवि बड़ी सहजता वेफ साथ रचना करता है।

;5द्ध भावों का उदात्तीकरण–यद्यपि कविता का उद्देश्य उपदेश देना नहीं होता, तथापित कवि इस प्रकार घात–प्रतिघात एवं जीवन की विभिन्न उलझनों को अपनी कविता में उतारता है कि हमें निर्दयता, क्रूरता, धूर्तता, वुफटिलता, अभिमान, दम्भ आदि वेफ प्रति घृणा उत्पन्न हो जाती है और हम सत्यता, सहृदयता, सदयता, सहिष्णुता आदि वेफ प्रति आकृष्ट होने लगते हैं। इसी को भावों का उदात्तीकरण कहते हैं, जिससे काव्य में गरिमा भी आती है। भावों की उदात्तता से अभिप्रेरित होकर बहुधा कवि महापुरुषों वेफ जीवन को आधार बनाकर कविता करते हैं। तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस, इसका अनुपम उदाहरण है। कई बार ऐसा भी होता है कि भावों की उदात्तता और परिवर्तन की यह प्रक्रिया सामूहिक आंदोलन का रूप ले लेती है। भक्तिकालीन काव्य और आधुनिक युग में प्रगतिवादी कविताएँ ऐसे ही आन्दोलनों की उपज हैं।

3

रस

स काव्य का मूल आधार, प्राण तत्त्व अथवा आत्मा है 'रस' का संबंध 'सृ' धातु से माना गया है जिसका अर्थ है–जो बहता है। अर्थात जो भाव रूप में हृदय में बहता है वही रस है। एक अन्य मान्यता वेफ अनुसार र 'रस' शब्द 'रस्' धातु और 'अच्' प्रत्यय वेफ योग से बना है जिसका अर्थ है जो बहे अथवा जो आस्वादित किया जाता है। वस्तुतः रस क्या है, इसका उत्तर रसवादी आचार्यों ने अपनी–अपनी प्रतिभा वेफ अनुरूप दिया है। 'रस' शब्द अनेक संदर्भों में प्रयुक्त होता है तथा प्रत्येक संदर्भ में इसका अर्थ अलग–अलग होता है। उदाहरण वेफ लिए पदार्थ की दृष्टि से 'रस' का प्रयोग षघ्रस वेफ लिएऋ आयुर्वेद वेफ शस्त्रा आदि धातु वेफ अर्थ मेंऋ भक्ति में ब्रह्मानंद वेफ लिए तथा साहित्य वेफ क्षेत्रा में काव्यास्वाद या काव्यानंद वेफ लिए रस का प्रयोग होता है। काव्य पढ़ने, सुनने अथवा देखने से श्रोता, पाठक या दर्शन एक ऐसी भावभूति पर पहुँच जाते हैं जहाँ चारों तरपफ वेफवल शुद्ध आनंदमयी चेतना का ही साम्राज्य रहता है। इस भावभूमि को प्राप्त कर लेने की अवस्था को ही रस कहा जाता है। अतः रस मूलतः अलौकिक स्थिति है। रस वेफवल काव्य की आत्मा ही नहीं है बल्कि यह काव्य का जीवन भी है। इसकी अनुभूति से सहृदय पाठक का हृदय आनंद से परिपूर्ण हो जाता है।

रस भाव जागृत करने एवं उनवेफ अनुभावन का सशक्त माध्यम माना जाता है। आचार्य भरतमुनि ने सर्वप्रथम 'नाट्यशास्त्रा' रचना वेफ अंतर्गत रस का सै(ांतिक विश्लेषण करते हुए रस निष्पत्ति पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उनवेफ अनुसार 'विभावानुभाव संचार संयोगाद् रस निष्पतिः' अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भाव वेफ संयोग से ही रस की निष्पत्ति होती है। किंतु साथ ही वे स्पष्ट करते हैं कि स्थायी भाव ही विभाव, अनुभाव और संचारी भाव वेफ संयोग से रस स्वरूप को ग्रहण करते हैं। इस प्रकार रस की अवधारणा को पूर्णता प्रदान करने में उनवेफ चार अंगों–स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। स्थायी भाव रस का पहला एवं सर्वप्रमुख अंग है। 'भाव' शब्द की उत्पति 'भ्' धातु से हुई है जिसका अर्थ है–संपन्न होना या विद्यमान होना। अतः जो भाव मन में सदा अविज्ञान, ज्ञात रूप में विद्यमान रहता है उसे स्थायी या स्थिर भाव कहते हैं। जब स्थायी भावों का संयोग विभाव, अनुभाव और संचारी भावों से होता है तो वे रस रूप में व्यक्त हो जाते हैं। सामान्यतः स्थायी भावों की संख्या अनेक हो सकती है किंतु आचार्य भरतमुनि ने स्थायी भाव आठ ही माने थे–रति, हास, शेक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा और विस्मय। परवर्ती इसकी संख्य नौ कर दी तथा 'निर्वेद' नामक स्थायी भाव की परिकल्पना की। आगे चलकर माधुर्य चित्राण

वेफ कारण 'वात्सल्य' नामक स्थायी भाव की भी परिकल्पना की। इस प्रकार रस वेफ अंतर्गत दस स्थायी भावों का मूल रूप से विश्लेषण किया जाता है इसी आधार पर दस रसों का उल्लेख किया जाता है। विभाव–रस का दूसरा अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण अंग है। भावों का विभाव करने वाले अथवा उन्हें आस्वाद योग्य बनाने वाले कारण 'विभाव' कहलाते हैं। 'विभाव', 'कारण', हेतु, निर्मित आदि से सभी पर्यायवाची शब्द हैं। विभाव का मूल कार्य सामाजिक हृदय में विद्यमान भावों की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानी गई है। विभाव वेफ दो प्रकार माने जाते हैं–आलंबन विभाव और उद्दीपन विभाग। आलंबन का अर्थ है आधार का आश्रय। अर्थात जिसका अवलंब या आधार लेकर स्थायी भावों की जाग्रति होती है उन्हें आलंबन कहते हैं। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि जो सोए हुए मनोभावों को जागृत करते हैं वे आलंबन विभाव कहलाते हैं। जैसे शृंगार रस वेफ अंतर्गत् नायक–नायिका आलंबन होंगे अथवा वीर रस वेफ अंतर्गत यु(वेफ समय रण में भाट एवं चरणों वेफ गीत चुनकर शत्रु को देखकर यो(ा वेफ मन में उत्साह भाव जागृत होगा। इसी प्रकार आलंबन की चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव कहलाती हैं जिसवेफ अंतर्गत् देशकाल और वातावरण को भी सम्मिलित किया जाता है। उद्दीपन का अर्थ है–उद्दीप्त करना, भड़काना या बढ़ावा देना। अर्थात जो जागृत भाव को उद्दीप्त करे वह उद्दीपन विभाव है। उदाहरण वेफ लिए शृंगार रस वेफ अंतर्गत चांदनी रात, प्राकृतिक सुषमा विहार सरोवर आदि तथा वीर रस वेफ अंतर्गत शत्रु की सेना, रणभूमि, शत्रु की ललकार, यु(वाद्य आदि उद्दीपन विभाव हैं। अनुभाव–रस–योजना का तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है आलंबन और उद्दीपन वेफ कारण जो कार्य होता है उसे अनुभाव कहते हैं। शास्त्रा वेफ अनुसार आश्रय वेफ मनोगत भावों को व्यक्त करने वाली शारीरिक चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं। भावों वेफ पश्चात उत्पन्न होने वेफ कारण इन्हें अनुभाव कहा जाता है। उदाहरण वेफ लिए शृंगार रस वेफ अंतर्गत नायिका वेफ कटाक्ष, वेशभूषा या कामोद्दीपक अंग संचालन आदि तथा वीर रस वेफ अंतर्गत् नाक का पफैल जाना, भौंहे टेढ़ी हो जाना, शरीर में कंपन आदि अनुभाव कहे गए हैं। अनुभावों की संख्या चार कही गई है–सात्विक, कायिक, मानसिक और आहार्य। कवि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन सभी अनुभावों का यथास्थान प्रयोग करता चलता है। सात्विक वे अनुभाव है जो स्थिति वेफ अनुरूप स्वयं ही उत्पन्न हो जाते हैं। इनकी संख्या आठ मानी गई है–स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंपन, वैवर्ण्य, अश्रु, प्रलय। परिस्थिति वेफ अनुरूप उत्पन्न शारीरिक चेष्टाएँ कायिक अनुभाव कहलाती हैं जैसे क्रोध में कटु वचन कहना, पुलकित होना, आँखें झुकाना आदि। मन या हृदय की वृति से उत्पन्न हर्ष, विषाद आदि का जन्म मानसिक अनुभाव कहलाता है। बनावटी अलंकरण, भावानुरूप वेश रचना आचार्य अनुभाव कहलाती है। संचारी–भाव–रस वेफ अंतिम महत्त्वपूर्ण अंग माना गया हैं आचार्य भरतमुनि ने रससूत्रा व्यभिचारी नाम से जिसका प्रयोग किया था, वह कालांतर में संचारी नाम से जाना जाता है। अनवरत संचरण करने वाले भाव ही संचारी भाव हैं। ये तत्काल बनते एवं मिटते रहते हैं। जैसे पानी में बनने वाले बुलबुले मणिक होने पर भी आकर्षक एवं स्थिति परिचायक होते हैं, वैसे ही इनकी भी स्थिति समझनी चाहिए। सामान्य शब्दों में स्थायी

भाव वेफ जागृत एवं उद्दीप्त होने पर जो भाव तरंगों की भांति अथवा जल वेफ बुदबुदों की भांति उठते हैं, और विलीन हो जाते हैं तथा स्थायी भाव को रस की अवस्था तक पहुँचाने में सहायक सि(होते हैं उन्हीं ही संचारी भाव कहा जाता है। संख्या 33 मानी है–;1. निर्वेद, स्तब्ध, ग्लानि, शंका, भ्रम, आलस्य दैन्य चिंता, स्वप्न, उन्माद, ब्रीड़ा, चपलता, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विशाद, निद्रा, स्वप्न, उन्माद, त्रास, धृति, समर्थ, उग्रता, अवछि था, व्याधि, मति, वितर्क, मरण। वास्तव में काव्य को आस्वाद योग्य रस ही बनाता है रस वेफ बिना काव्य निराधार एवं प्राणहीन है। अतः रस की जानकारी रखते हुए रस युक्त काव्य पढ़ना साहित्य–शिक्षण का मूल धर्म है। अतः सब होकर रसयुक्त की चर्चा करते हुए उदाहरण सहित रूप को जाने–परखेंगे। आचार्य भरतमुनि का मानना है कि अनेक द्रव्यों से मिलाकर तैयार किया गया प्रपाणक द्रव्य व खट्टा होता है, न मीठा और न ही तीखा बल्कि इन सबसे अलग होता है ठीक उसी प्रकार विविध भावों से युक्त रस का स्वाद मिलाजुला और आनंददायक होता है। अभिनवगुप्त रस को अलौकिक आनंदमयी चेतना मानते हैं। जबकि आचार्य विश्वनाथ का मानना है कि रस अखंड और स्वयं प्रकाशित होने वाला भाव है जिसका आनंद ब्रह्मानंद वेफ समान है। रस वेफ आनंद का आस्ताद वेफ अंतर्गत अनेक भाव समाप्ति रहते हैं। इसे ही रस भेद कहा गया है। रस मूल रूप से नौ थे किंतु स्थायी भाव वेफ मनुरूप इनकी संख्या रस है– शृंगार रस, वीर रस, करुण रस, रौद्र रस, हास्य रस, अद्भुत रस, भयानक रस, वीभत्स रस, शांत रस और वत्सल रस। शृंगार रस– शृंगार रस रसों का राजा एवं महत्त्वपूर्ण प्रथम रस माना जाता है। विद्वानों वेफ मतानुसार शृंगार रस की उत्पति ' शृंग'+'आर' से हुई है जिसमें ' शृंग' का अर्थ है–काम की वृ(तथा 'आर' का अर्थ है–प्राप्ति। अर्थात् काम–वासना की वृ(एवं प्राप्ति ही शृंगार है। इसका स्थायी भाव रति है। सहृदय वेफ हृदय में संस्कार रूप में या जन्मजात रूप में विद्यमान रति नामक स्थायी भव अपने प्रतिवूफल विभाव, अनुभाव और संचारी भाव वेफ संयोग से अभिव्यक्त होकर जब आस्वाद योग्य बन जाता है तब वह शृंगार रस में परिणत हो जाता है। शृंगार रस में परिणत हो जाता है। शृंगार का आलंबन विभाव नायक नायिका या प्रेमी–प्रेमिका हैं। उद्दीपन विभाव नायक नायिका की परस्पर चेष्टाएँ, उद्यान, लता–वुफंज आदि हैं। अनुभाव अनुरागपूर्वक स्पष्ट अवलोकन, आलिंगन, रोमांच स्वेद आदि हैं। उग्रता, मरण और जुगुप्सा को छोड़कर अन्य सभी संचारी भाव शृंगार वेफ अंतर्गत् आते हैं। शृंगार रस वेफ सुखद एवं दुखद दोनों प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं इसी कारण इसवेफ दो रूप हैं–;प. संयोग शृंगार एवं ;पप. विप्रलंब शृंगार

;पद्ध संयोग शृंगार–संयोग शृंगार को संभोग शृंगार भी कहते हैं। इसवेफ अन्तर्गत नायक–नायिका वेफ परस्पर मिलन, प्रेमपूर्ण कार्यकलाप एवं सुखद अनुभूतियाँ का वर्णन होता है। जैसे–

''कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत, लजियात। भरै भौन मे करत है, नैनन ही सौं बाता।''

प्रस्तुत दोहे में बिहारी कवि ने एक नायक–नायिका की प्रेमपूर्ण चेष्टाओं का बड़ा वुफशलतापूर्वक वर्णन किया है। अतः यहाँ संयोग शृंगार है। नवीं–दसवी कक्षा की पाठ्यपुस्तकों में भी अनेक स्थलों पर संयोग देखा जा सकता है। यथा क्षितिज भाग–1 वेफ अंतर्गत रसखान द्वारा रचित सवैये में गोपियाँ द्वारा की गई कृष्ण वेफ रूप सौंदर्य की प्रशंसा एवं उससे आकर्षित होने का भाव व्यंजित किया गया है–

''मोरपखा सिर ऊपर राखिहौ, गुंज की माल गरे पहिरौंगीं। ओढ़ि पितंबर लै लकुरी बन गोधन ग्वारनि संग पिफरौंगी। भावतो तोहि मेरौ रसखानि सो तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अध्रा न धरौंगी।''

मुरलीधर कृष्ण से आकर्षित गोपियों वेफ मनोभावों को यहाँ सुंदर ढंग से वर्णित करते हुए संयोग शृंगार का बड़ा सुंदर प्रयोग किया गया है। वुफछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं–

;1द्ध पाँयनि नूपुर मंजु बजैं, करि किंकिनी कै धुनि की मधुराई। साँवरे अंग लसै पर पीत, हिये हुलसै बनमाल सुहाई।

'देव' कृत सवैया ;क्षितिज भाग–2.

;2द्ध प्रेमी ढूँढत मे पिफरौ, प्रेमि मिलै न कोय। प्रेमी को प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होय।

;कबीर, कृत साखियाँ क्षितिज भाग–1.

;पपद्ध वियोग शृंगार–इसे विप्रलंब शृंगार भी कहा जाता है। वियोग शृंगार वहाँ होता है जहाँ नायक–नायिका में परस्पर उत्कट प्रेम होने वेफ बाद भी उनका मिलन नहीं हो पाता। इसवेफ अंतर्गत विरह से व्यथित नायक–नायिका वेफ मनोभावों को व्यक्त किया जाता है।

'अति मलीन वृषभानु कुमारी।
हरि)म जल संतर तनु भीजै,
ता लालत्त न घुआवति सारी।'

प्रस्तुत अंश में सूरदास जी ने कृष्ण वेफ वियोग में राधा वेफ मनोभावों एवं दुख का बड़ा ह्रदयहारी चित्राण किया है। अतः यहाँ वियोग शृंगार है। हमारी पाठ्य–पुस्तक में भी वियोग शृंगार वेफ उदाहरण देखें जा सकते हैं। यथा सूरदास द्वारा रचित निम्न पद में गोपियों की विरह व्यथा का बड़ा सुंदर देखा जा सकता है–

''हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन, क्रम, बचन, नंद–नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी। जागत सोवत स्वप्न दिवस–निसि, कान्ह कान्ह जकरी। सुनत जोग लागते है ऐसो, ज्यो करुई ककरी।।''

इसवेफ अतिरिक्त वियोग शृंगार वेफ वुफछ अन्य उदाहरण इस प्रकार है–

;पद्ध मन की मन ही माँझ रही।

कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाही परत कही। अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही। अब इन जोग संदेसनि, सुनि–सुनि बिरहिनी बिरह दही।

;पपद्ध उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की। अरे खिलखिलाकर कर हँसते, होने वाली उन बातों की।

मिला कहाँ वह सुख जिसका, मैं स्वप्न देखकर जाग गया। आलिंगन में आते–आते, मुसक्या कर जो भाग गया।

;सूरदास पद क्षितिज भाग–2.

;जयशंकर प्रसाद, 'आत्मकथ्य' क्षितिज भाग–2.

;2द्ध करुण रस–जहाँ किसी हानि वेफ कारण शोक–भाव उपस्थित होता है, वहाँ करुण रस उपस्थित होता है। पर हानि किसी अनिष्ट, किसी वेफ निधन अथवा प्रेम पात्रा वेफ चिरवियोग वेफ कारण संभव होती है। शास्त्रा वेफ अनुसार शोक नामक स्थायी भाव अपने अनुवूफल विभाव, अनुभाव एवं संचारी भावों वेफ संयोग से अभिव्यक्त होकर जब आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तब उसे करुण रस कहा जाता है। प्रियजन का वियोग, बंधु विवश, पराधव, खोया ऐश्वर्य, दरिद्रता, दुखपूर्ण परिस्थितियाँ आदि आलंबन है। प्रिय व्यक्ति की वस्तुएँ, सुर्खिया, यश एवं गुण कथन, संकटपूर्ण परिस्थितियाँ आदि उद्दीपन विभाव हैं। करुणरस का अनुभाव रोना, जमीन पर गिरना, प्रलाप करना, छाती पीटना, आँसू बहाना, छटपटाना आदि हैं। इसवेफ अंतर्गत् निर्वेद, मोह, जड़ता, अत्तु, ग्लानि, चिंता, स्मृति, विषाद, मरण, स्नेह, घृणा, दैन्य आदि संचारी भाव आते है। भवभूति का मानना है कि करुण ही एकमात्रा रस है जिससे सह्रदय पाठक सर्वाधिक संबंध स्थापित करता है। यथा

'रामचरितमानस' में दशरथ वेफ निधन वर्णन द्वारा करुण रस की चरम स्थिति का वर्णन किया है–

''राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम। तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गयऊ सुरधाय।।''

आधुनिक कवियों ने करुण रस वेफ अंतर्गत दी। दरिद्रता एवं सामाजिक दुख–शोक का वर्णन सर्वाधिक किया। इसी रूप में करुण रस की अभिव्यति सर्वाधिक रूप में देखी जा सकती है। यथा क्षितिज भाग–2 वेफ अंतर्गत सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कृत 'उत्साह' शीर्षक कविता में व्यावुफल जन–मानस का वर्णन करते हुए बादलों को करुणा प्रवाहित करते हुए बरसने का वर्णन किया है–

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन विश्व के निदाघ के सकल जन,

आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन। तप्त धरा, जल से पिफर
शीतल कर दो– बादल गरजो

इसी प्रकार वुफछ अन्य उदाहरण देखे जा सकते हैं जिससे समाज का कारुणिक दृश्य प्रदर्शित करते हुए करुण रस का हृदयहारी चित्राण किया गया है–

;पद्ध पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए बच्चे, बहुत छोटे–छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

;पपद्ध काली तू, रजनी भी काली, शासन सकी करनी भी काली काली लहर कल्पना काली मेरी काल कोठरी काली।

–राजेश जोशी कृत 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' क्षितिज भाग–1

–माखनलाल चतुर्वेदी कृत 'वेफदी और कोकिल' क्षितिज भाग–1

;3द्ध वीर रस–जहाँ विषय और वर्णन में उत्साह युक्त वीरता वेफ भाव को प्रदर्शित किया जाता है वहाँ वीर रस होता है। शास्त्रा वेफ अनुसार उत्साह का संचार इसवेफ अंतर्गत किया जाता है किंतु इसमें प्रधानतया रण–पराक्रम का ही वर्णन किया जाता है। सहृदय वेफ हृदय में विद्यमान उत्साह नामक स्थायी भाव अपने अनुरूप विभाव, अनुभाव और संचारी भावों वेफ संयोग से अभिव्यक्ति होकर जब आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तब उसे वीर रस कहा जाता है। आचार्यों वेफ अनुसार वीर रस वेफ चार भेद हैं–यु(वीर, धर्मवीर, दानवीर और दयावीर। वीर रस का अलंबन शत्राु, तीर्थस्थान, पर्व, धार्मिक ग्रंथ या दयनीय व्यक्ति माना गया है। शत्राु का पराक्रम, अन्य दाताओं का दान, धार्मिक इतिहास तथा दयनीय व्यक्ति की दुर्दशा वीर रस का उद्दीपन विभाव है। गर्वोक्तियाँ, याचक का आदर सत्कार, धर्म वेफ लिए कष्ट सहना तथा दया पात्रा वेफ प्रति सांत्वना अनुभाव हैं। धृति, स्मृति, गर्व, हर्ष, मति आदि वीर रस में आने वाले संचारी भाव है। यथा यु(वीर का एक उदाहरण देखा जा सकता है जिसमें वीर अभिमन्यु अपने सारथि से यु(वेफ संबंध में उत्साहवर्धक पंक्तियों कह रहा है–

हे सारथे है द्रौण क्या, देवेंद्र भी आकर अड़े।
है खेल क्षत्रिाय बालकों का, व्यूह भेद न कर लड़े। मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानो मुझे यमराज से भी यु(को प्रस्तुत सदा मानो मुझे।

क्षितिज भाग–2 में निराला कृत 'उत्साह' शीर्षक कविता वीर भाव और ओज गुण का संचार करने वाले वीर रस की सशक्त रचना है। इसका एक उदाहरण देखा जा सकता है–

बादल गरजो!

घेर घेर घोर गगन, धराधर ओ ललित ललित, काले घुँघराले बाल कल्पना के–से पाले विद्युत–छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले! वज्र छिपा, नूतन

कविता पिफर भर दो– बादल गरजो

इसी प्रकार वुफछ अन्य उदाहरण देखे जा सकते हैं जिनमें वीर रस का सुंदर प्रयोग करते हुए कवि उत्साह भाव का संचार करता है–

;पद्ध देख विषमता तेरी–मेरी बजा रही तिस पर रणभेरी। इस हुकृंति पर,

अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ। कोकिल बोलो तो मोहन के व्रत पर

प्राणों का आसव किसमें भर दूँ कोकिल बोलो तो –माखनलाल चतुर्वेदी 'वेफदी और कोकिल' ;क्षितिज भाग–1.

;पपद्ध बालक बोलि बधौ नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोहि। बाल ब्रह्मचारी मति कोही। बिस्तबिदित सत्रिानकुल द्रोही। भुजबल भूमि भूप बिदु किन्ही। बिपुल बार महि देवन्ह दीन्ही। सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महिपकुमारा।

–तुलसी कृत मानस का राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद ;क्षितिज भाग–2.

;4द्ध हास्य रस–हास्य रस मनोरंजक रस है। आचार्यों वेफ मतानुसार 'हास' नामक स्थायी भाव अपने

अनुवूफल विभाव, अनुभाव और संचारी भावों वेफ संयोग से अभिव्यक्त होकर जब आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तब उसे हास्य रस कहा जाता है। सामान्यतः विकृत आकार–प्रकार, वेशभूषा वाणी तथा चेष्टाओं आदि को देखने से हास्य रस की निष्पति होती है। यह हास्य दो प्रकार का होता है–आत्मस्थ तथा परस्य। आत्मस्थ हास्य वेफवल हास्य वेफ विषय को देखने मात्रा से उत्पन्न होता है जबकि परस्थ हास्य दूसरों को हँसते हुए देखने से प्रकट होता है। विकृत आकृति वाला व्यक्ति, किसी की अनोखी और विचित्रा वेशभूषा, हँसाने वाली या मूर्खतायुक्त चेष्टा करने वाला व्यक्ति हास्य रस का आलंबन होता है। जबकि आलंबन द्वारा की गई अनोखी एवं विचित्रा चेष्टाएँ उद्दीपन है। आँखों की मीचना, हँसते–हँसते पेट पर बल पड़ना आँखों में पानी आना, मुस्वुफराहट, हँसी, ताली पीटना आदि अनुभाव हैं। जबकि हास्य रस वेफ अंतर्गत हर्ष, चपलता, अश्रु, उत्सुकता, स्नेह, आवेग, स्मृति आदि संचारी भाव आते हैं। यथा एक हास्य रस का उदाहरण इस प्रकार है जिसमें पत्नी वेफ बीमार पड़ने का चित्राण कर हल्की हास्यास्पद स्थिति का चित्राण काका हाथरसी अपने एक छंद में करते हैं–

''पत्नी खटिया पर पड़ी, व्याकुल घर के लोग। व्याकुलता के कारण, समझ न पाए रोग। समझ न पाए रोग, तब एक वैद्य बुलाया। इसको माता निकली है, उसने यह
समझाया। कह काका कविराय, सुने मेरे भाग्य विधाता। हमने समझी थी पत्नी, ये तो निकली माता।।''

क्षितिज भाग–1 एवं 2 पाठ्यपुस्तकों में हास्य रस पर आधारित कोई कविता दिखलाई नहीं देती। किंन्तु तुलसी द्वारा रचित रामचरितमानस वेफ अंश 'राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद' में लक्ष्मण द्वारा परशुराम का मजाक बनाना एवं उस पर हँसने का वर्णन है। इस अंश में हम हास्य रस का पुट देख सकते हैं। यहाँ लक्ष्मण परशुराम का मूर्खता को इंगित करते हुए उन पर हँसते हुए कहते हैं–

;पद्ध लखन कहा हसि हमरे जाना। सुनहु देव सब धनुष सनाना। का छति लाभु जून धनु तोरे। रेखा राम नयन वेफ शोरे।

;पपद्ध ''बिहसि लखन बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभर यानी। पुनि पुनि मोहि देखात वुफहारू। चहत उड़ावन वूफँकि पहारू।''

;5द्ध रौद्र रस–क्रोध भाव को व्यंजित करने वाला अगला रस रौद्र रस है। शास्त्रा वेफ अनुसार सहृदय में वासना में विद्यमान क्रोध नामक स्थायी भाव अपने अनुरूप विभाव, अनुभाव ओर संचारी भाव वेफ संयोग से जब अभिव्यक्त होकर आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तब उसे रौद्र रस कहा जाता है। वस्तुतः जहाँ विरोध अपमान या उपकार वेफ कारण प्रतिशोध की भावना क्रोध उपजती है वहीं रौंद्र रस साकार होता है। अतः अपराधी व्यक्ति, शत्राु, विपक्षी या दुराचारी रौद्र रस का आलंबन है। अनिष्ट कार्य, निंदा, कठोर,

वचन, अपमानजनक वाक्य आदि उद्दीपन विभाव है। रौद्र रस का अनुभाव आँखों का लाल होना, होंठों का पफड़पफड़ाना, भौंटो का रेढ़ा होना, दांत पीसना, शत्राुओं को ललकारना, अस्त्रा–शस्त्रा चलाना यादि है। वही मोह, उग्रता, स्मृति, भावेग, चपलता, मति, उत्सुकता, अर्मष आदि संचारी भाव है। यथा एक उदाहरण रेखा जा सकता है जिसमें कृष्ण वेफ वचनों को सुनने वेफ बाद अर्जुन वेफ क्रोध भाव को व्यक्त किया गया है–

श्री कृष्ण के सुन वचन अर्जुन शोभा से जलने लगे। लव शील अपना भूलकर करतल युगल मलने लगे। संसार देखे अब हमारे शत्राु रण में मृत पड़े। करते हुए यह घोषणा वे हो गए उठकर खड़े।।''

नवीं एवं दसवीं वेफ पाठ्यक्रम में अनेक स्थलों पर रौद्र रस का उदाहरण देखा जा सकता है। इस संदर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है जिसमें परशुराम लक्ष्मण पर क्रोध करते हुए अपने आवेश प्रकट करते हैं–

रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न संभार। धनुही सम त्रिापुरारी ध्तु बिदित सकल संसारा।

;राम–लक्ष्मण–परशुराम संवाद, तुलसीदास, क्षितिज–2.इसी प्रकार अन्य उदाहरण हैं–

;1द्ध सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधरि धरेउ कर घोरा। अब जनि देर दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालक बध जोगू।

;राम–लक्ष्मण–परशुराम–संवाद–तुलसीदास क्षितिज भाग–2.

;2द्ध क्या हुई बावली, अ(रात्रि को चीखी कोकिल बोलो तो! किस दावानल की ज्वालाएँ है दीखीं? कोकिल बोलो तो।

;'वैफदी और कोकिल' माखनलाल चतुर्वेदी क्षितिज भाग–1.

;6. भयानक रस–शास्त्रा ने अनुसार किसी बलवान शत्राु अथवा भयानक वस्तु को देखने पर उत्पन्न भय ही भयानक रस है। भय नामक स्थायी भाव जब अपने अनुरूप आलंबन, उद्दीपन एवं संचारी भावों का संयोग प्राप्त कर आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तो इसे भयानक रस कहा जाता है। इस रस का आलंबन भयावह या जंगली जानवर अथवा बलवान शत्राु है। निस्सहाय और निर्बल होना, शत्राुओं या हिंसक जीवों की

चेष्टाएँ उद्दीपन है। स्वेद, कंप, रोमांच यदि इसवेफ अनुभाव है। जबकि संचारी भावों वेफ अंतर्गत त्रास, मोह, ग्लानि दैन्य, शंका, चिंता, आवेग आदि आते हैं। उदाहरण–

एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय। बिकल बिरोही बीच ही, परयो मूरछा खाय।

प्रस्तुत उदाहरण में एक मुसापिफर वेफ अजगर और सिंह वेफ मध्यम पफँसने एवं उसवेफ शय का वर्णन किया गया है। अतः यहाँ भयानक रस है क्षितिज भाग–1 एवं 2 की पाठ्यपुस्तकों में भी भयानक रस वेफ वुफछ उदाहरण देखे जा सकते हैं। यथा 'यमराज की दिशा' शीर्षक कविता यम वेफ शय का सुंदर वर्णन किया है तो दूसरी ओर दक्षिणा दिशा में संबंधित मत में भी सामाजिक भय ही दिखलाई देता है–

;1द्ध माँ ने एक बार मुझसे कहा था– दक्षिण की तरपफ पैर करके मत सोना वह मृत्यु की दिशा है
और यमराज को व्रुफ(करना बुि(मानी की बात नहीं।

;2द्ध पर आज जिधर भी पैर करके सोचो वही दक्षिण दिशा हो जाती है
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं और वे सभी में एक साथ अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं

;7द्ध वीभत्स रस–वीभत्स रस घृणा वेफ भाव को प्रकट करने वाला रस है। आचार्यों वेफ मतानुसार जब

घृणा या जुगुप्सा का भाव अपने अनुरूप आलंबन, उद्दीपन एवं संचारी भाव वेफ संयोग से आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तो इसे वीभत्स रस कहा जाता है। घृणास्पद व्यक्ति या वस्तुएँ इसका आलंबन है। घृणित चेष्टाएँ एवं ऐसी वस्तुओं की स्मृति उद्दीपन विभाव है। चूकना, मुँह पफेरना, आँखें मूँद लेना इसवेफ अनुभाव है। जबकि इसवेफ अंतर्गत मोह, अपस्मार, आवेग, व्याधि, मरण, मूर्छा आदि संचारी भाव आते हैं। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है–

''सिर पै बैठ्यो काग, आँख दोउ खात निकारत। खींचत जींभहि स्यार, अतिहि आनंद उर धारत।''

उपर्युक्त उदाहरण में शव को बांचते कौओं और गि(वेफ घृणित दृश्य की प्रस्तुति वेफ कारण यहाँ वीभत्स है। हमारी पाठ्यपुस्तक में इस प्रकार वेफ दृश्य न वेफ बराबर हैं।

;8द्ध अद्भुत रस–विस्मय करने वाला रस अद्भुत रस कहलाता है। जब विस्मय भाव अपने अनुवूफल अलंबन उद्दीपन अनुभाव और संचारी भाव का संयोग पाकर आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तो उसे अद्भुत रस कहते हैं। अद्भुत रस का आलंबन अलौकिक या विचित्रा वस्तु या व्यक्ति है। आलंबन की अद्भुत चेष्टाएँ एवं उसका श्रवण–वर्णन उद्दीपन है। इससे स्तंभ स्वेद, रोमांच, आश्चर्यजनक भाव या अनुभाव उत्पन्न होते हैं। इसवेफ अतिरिक्त वितर्क, आवेग, हर्ष, स्मृति, मति, त्रास आदि संचारी भाव इसी वेफ अंतर्गत आते हैं। इसका एक उदाहरण इस प्रकार है–

''अखिल भुवन चर अचर सब, हरिमुख में लखि मात। चकित भई गद्गद् वचन विकसित दृग पुलकात।''

प्रस्तुत अंश में माता यशोदा का कृष्ण वेफ मुख में ब्रह्मांड दर्शन से उत्पन्न विस्मय वेफ भाव को प्रस्तुत किया गया है। यह रस असंभव से लगने वाले भाव को उत्पन्न करता है। हमारी पाठ्यपुस्तक में भी अद्भुत रस वेफ उदाहरण देखे ना सकते हैं। कहीं पानी वेफ जादू से कवि विस्मृत है तो कहीं चंद्र गहना से कवि आश्चर्य भी डूबा हुआ है। हमारी पफसलें भी कवि या समाज को रोमांचित करती हैं। ये सभी अद्भुत रस वेफ ही उदाहरण है–

;1द्ध एक के नहीं,
दो के नहीं
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू

;2द्ध देख आया चंद्र गहना। देखता हूँ दृश्य अब मैं
मेड़ पर इस खेत की बैठा अकेला।'

;3द्ध 'रोमांचित–सी लगती है वसुधा आई जौं में बोली
अरहर सवई की सोने की किंकणियाँ हैं शोभाशाली'

;'पफसल' नागार्जुन, क्षितिज भाग–1.

;'चंद्र गहना से लौटती बर' वेफदारनाथ अग्रवाल.

;'ग्रामश्री' सुमित्राानंदन पंत.

;9. शांत रस–तत्वज्ञान और वैराग्य से शांत रस की उत्पत्ति मानी गई है। इसका स्थायी भाव निर्वेद या शम है जो अपने अनुरूप विभाव अनुभव और संचारी भाव से संयुक्त होकर आस्वाद का रूप धारण करवेफ शांत रस रूप में परिणत हो जाता है। संसार की क्षणभंगुरता, कालचक्र की प्रबलता आदि इसवेफ आलंबन हैं।

संसार वेफ प्रति मन न लगना, उचाटन का भाव या चेष्टाएँ अनुभाव है। जबकि धृति, मति, विबोध, चिंता आदि इसवेफ संचारी भाव हैं। उदाहरणतः तुलसी वेफ निम्न छंद में, संसार का सत्य बताया गया है कि समय चूकने वेफ बाद मन पछताता है अतः मन को सही समय पर सही कर्म वेफ लिए प्रेरित करना चाहिए–

''मन पछितैहै अवसर बीते।

दुरलभ देह पाइ हरिपद भजु, करम वचन भरु हीते। सहसबाहु दस बदन आदि नृप, बचे न काल बलीते।।''

हमारी पाठ्यपुस्तकों में कबीर, सूर, तुलसी की इस प्रकार की वाणी संकलित है जिसमें जीवन का सत्य एवं संसार की असारता का वर्णन है। ये सभी शांत रस वेफ ही उदाहरण हैं। वुफछ शांत रस वेफ ऐसे वुफछ उदाहरण इस प्रकार है–

;1द्ध ऊँचे कुल का जनमिया, जे करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस पुरा भरा, साधू निंदा सोइ।–'साखियाँ'–कबीर

;2द्ध संतो भाइ भाई ग्यान की आँधी रे।
श्रम की टाटी सबै उड़ानी, माया रहै न बाँधी। हिति चिति की द्वै यूनी गिरानी, मोह बलिंदा तूरा।–'सबद'–कबीर

;3द्ध खा–खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी। सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बंद द्वार की–'वाख' ललद्यद ;10. वत्सल रस–माता–पिता एवं संतान वेफ प्रेम–भाव को प्रकट करने वाला रस वत्सल रस है। वत्सल नामक भाव जब अपने अनुरूप विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से सुयुक्त होकर आस्वाद का रूप धारण कर लेता है तब वह तत्सल रस में परिणत हो जाता है। माता–पिता एवं संतान इसवेफ आलंबन हैं। माता–पिता–संतान वेफ मध्य क्रियाकलाप उद्दीपन हैं। आश्रय की चेष्टाएँ, प्रसन्नता का भाव आदि अनुभाव हैं, जबकि हर्ष, गर्व, मौतुसक्य आदि संचारी भाव हैं। इसका एक उदाहरण देखा जा सकता है जिसमें बालक कृष्ण को घुटनों वेफ बल चलते देख यशोदा की प्रसन्नता का वर्णन किया गया है–

''किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत।

मचिमय कनक नंद के भांजन बिंब पकरयै धातत। बालदसा मुख निरटित जसोदा पुनि पुनि चंद बुलाबन। अँचरा तर लै ढाँकि सूर के प्रभु को दूध पिलावत।''

हमारी पाठ्यपुस्तक में 'यमराज की दिशा' शीर्षक कविता में मां वेफ डर एवं उसवेफ वर्णन द्वारा वत्सल रस को ही अभिव्यक्ति दी गई है। वहीं दूसरी ओर यह दंतुरित मुस्कान में बालक की मुस्कान का वर्णन है तो 'कन्यादान' द्वारा लड़की वेफ विवाह वेफ अवसर पर जागृत भावों को अभिव्यक्ति की है ये सभी वत्सल रस वेफ उदाहरण है–

;1द्ध मां की ईश्वर से मुलाकात हुई या नहीं कहना मुश्किल है
पर वह जताती थी जैसे
ईश्वर से उसकी बातचीत होती रहती है।

;2द्ध कितना प्रामाणिक था उसका दुख लड़की को दान में देते वक्त जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो।

;3द्ध तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान मृतक में भी डाल देगी जान धूलि–धूसर तुम्हारे ये गात...

–'यमराज की दिशा'–चंद्रकांत देवताले

–'कन्यादान'–)तुराज

–'वह दंतुरित मुस्कान'–नागार्जुन

इस प्रकार कविताओं में रस की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। रस की मूल भाव या काव्य तत्व है जिससे पाठक कविता से संब(हो पाता है। रस की काव्य का मूल आधार या प्राण तत्त्व है।

4

छन्द विवेचन

भावतः मनुष्य अपनी अनुभूतियों को, संवेदनाओं को और विचारों को परस्पर बांटना चाहता है। वह मन वेफ स्वास्पफूर्त भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है और दूसरों वेफ भावों एवम्

Lo

विचारों का जानना चाहता है। उसने पारस्परिक विचार विनमय वेफ लिए जिस स्थायी अभिव्यक्ति माध्यम को अपनाया वह ही साहित्य कहलाता है। अभिव्यक्ति वेफ अनेक सोपानो को तय करता हुआ साहित्य आज मुख्यतः गद्यात्मक एवम् पद्यात्मक दो रूपों में सृजित हो रहा है। हिन्दी साहित्य में गद्य अनेक लेखन विधाओं और शैलियों में लिखा जा रहा है। हिन्दी का आधुनिक काव्य गद्य लेखन की विविधता और विपुलता का काल कहलाता है। यहाँ हमारी विवेचना का विषय कविता है इसलिए कविता और उसमें प्रयुक्त छन्दों की संक्षिप्त चर्चा हो हमारा अभीष्ट है। कविता मानव मन की अनुभूतियों का मन की संवेदनाओं का प्रतिबिम्ब होती है। कविता में प्रमुखतः कोमलता का भाव प्रधान रहता है इसलिए उसमें भावों की मार्मिकता और कमनीयता सदैव अभीष्ट रहती है। साहित्य में कविता में सर्वाधिक सम्प्रेषणीयता निहित रहती है इसलिए उसकी जन लोकप्रियता पाठक और श्रोता दोनों में ही बनी रहती है। साहित्य मनीषियों ने कविता को अधिक सबल, सक्षम और जनप्रिय बनाने वाले अनेक काव्यतत्वों की विवेचना की है। यहाँ हमारा उद्देश्य कविता वेफ काव्यशास्त्राीय विधायी तत्वों की समीक्षा करना नहीं अपितु दिल्ली प्रशासन वेफ विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राों वे हित को ध्यान में रखते हुए हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में संकलित कविताओं में प्रयुक्त छन्द वेफ प्रयोग और उसकी उपादेयता को रेखांकित करना है ताकि पठन और पाठन में सहज–सरल बोध ग्राह्यता को बढ़ाया जा सवेंफ

हिन्दी की विभिन्न कक्षा स्तरों की पाठ्य पुस्तक में संकलित कविताओं में छन्द विधान की दृष्टि से छन्दब(और छन्दमुक्त दोनों ही प्रकार की कविताएँ सम्मलित की गई है। हिन्दी साहित्य में काल विभाजन की दृष्टि से छायावाद युग से पहले कवि प्रायः छन्दब(कविता ही लिखते रहे हैं। लेकिन छायावाद वेफ आते–आते साहित्य सृजकों में शिल्प वेफ स्थान पर वर्ण्य विषय वेफ भाव को महत्त्वपूर्ण मान लिया गया परिणामतः हिन्दी कविता छन्दमुक्त होकर जनसामान्य तक पहुँचने लगी। छन्द मुक्त कविता ने भी कविता वेफ अन्य गुण चर्चो का परित्याग नहीं किया। अर्थात् छन्दमुक्त कविता में भी लय, गीत, प्रवाह, तुकाव्यता और गेयता वेफ निर्वाह का ध्यान रखा गया। छन्द मुक्त कविता वेफ भी कवि वेफ मन्तव्य और पाठक प्रयोजन का भलीभांति निर्वाह किया है। कई अर्थो में छन्दमुक्त कविता वैचारिक शुष्कता वेफ उपरान्त भी अधिक जनवादी और प्रयोजनवती हो गई। प्रथमतः छन्द युक्त कविता में प्रयुक्त छन्दों वेफ लक्षणों और उनवेफ मुख्य भेदों पर संक्षिप्त चर्चा करते हैं।

छन्द दो प्रकार वेफ होते हैं।

;1. मात्रिाक छन्द–वे छन्द जिनमें कविता वेफ चरणों में प्रयुक्त मात्राओं को गणना को ही आचार मानकर छन्द की रचना की जाती है। अर्थात शिल्प की दृष्टि से कविता में कितने चरण है। प्रत्येक चरण में कितनी मात्राओं का विधान है। कितनी मात्राओं वेफ उपरान्त यति का विधान है। चरणों दो प्रकार वेफ होते हैं। ;क. समचरण–जहाँ प्रत्येक चरण में मात्राओं की संख्या बराबर हो। जैसे चौपाई छन्द वेफ प्रत्येक चरण में मात्राओं संख्या 16–16 होती है। ;ख. विषमचरण–जिन छन्दों में प्रयुक्त यति या विरामवेफ आचार पर चरणों में मात्राओं की संख्या में भिन्नता हो। जैसे दोहा, सोरठा आदि छन्दों में प्रयुक्त चरणों की संख्या अलग–अलग है। उदारणार्थ दोहा वेफ चार चरण होते हैं। जैसे दोहा, सोरठा आदि छन्दों में प्रयुक्त चरणों की संख्या अलग–अलग है। उदाहरणार्थ दोहा वेफ चार चरण होते हैं। दोहा वेफ प्रथम व तीसरे चरण में 13–13 मात्राएँ और दूसरे व चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती है। अतः यहाँ विषम चरण का प्रयोग है। ;2. वार्णिक छन्द–वार्णिक छन्द वे छन्द कहलाते हैं जहाँ निर्धारित गणों वेफ अनुरूप वर्णों का प्रयोग किया जाता हो। हालांकि गणों में भी वर्णों की मात्रा को ही आधार माना जाता है लेकिन छन्द विधान की दृष्टि से वर्णों का क्रम निश्चित रहता है। तीन वर्णों वेफ समूह गण गणों की संख्या आठ हैं और उनवेफ वर्णों की मात्राओं का क्रम भी निम्न प्रकार निश्चित है। य गण = [illegible] ;प्रथम मात्रा लघु पुनः दो मात्राएँ दीर्घ अथवा गुपफा. म गण =" ;तीनों वर्णों की मात्राएँ क्रमश गुरु.

त गण =[illegible] ;प्रथम दो मात्राएँ गुरु और अन्तिम एक लघु. र गण =[illegible] ;प्रथम गुरु मात्रा शेष दोनों लघु व गुरु मात्राएँ.

ज गण =[illegible] ;प्रथम व अन्तिम मात्राएं लघु व मध्य वेफ गुरु मात्रा. भ गण =[illegible] ;प्रथम मात्रा गुरु व शेष दोनों मात्राएं लघु–लघु.न गण = [illegible] ;न गण की तनों मात्राएं क्रमशः लघु–लघु.स गण = [illegible] ;प्रथम दोनों मात्राएं लघु व अंतिम मात्रा गुरु.

लघु मात्रा का संख्या मूल्य एक व गुरु मात्रा का संख्या मूल्य गणना में दो वेफ बराबर होता है। लघु मात्रा का चिह्न । खड़ी सरल रेखा है। गुरु मात्रा का चिह्न" अंग्रेजी का रस अक्षर है।

छन्द के प्रमुख अंग

गीत–पद्य वेफ पाठ में जो प्रवाह अथवा बहाव होता है उसे गीत कहते हैं।

यति–पद्य पाठ करते समय गीत को बाधित कर जो विश्राम दिया जाता है उसे यति कहते हैं। तुक/तुकान्तता–समान उच्चारण वाले शब्दों वेफ प्रयोग को तुक कहा जाता है। छन्दब(कविता में चरणों वेफ अंतिम शब्द में तुक वेफ प्रयोग पर अधिक बल दिया गया है। छन्द मुक्त कविता में भी तुकान्तता का प्रयोग हुआ है। मात्रा–वर्ण वेफ उच्चारण में जो समय लगता है उसे मात्राा कहते हैं। मात्राा लघु एवं गुरु दो प्रकार की होती है। ”स्व उच्चारण वाले वर्णों की मात्राा लघु एवं दीर्घ उच्चारण वाले वर्णों की मात्राा गुरु होती है।

काव्य में छन्द का महत्त्व

कविता में छन्द वेफ प्रयोग से पाठक या श्रोता वेफ हृदय में सौंदर्य बोध की गहरी अनुभूति होता है। छन्द में यति, गति वेफ सम्यक निर्वाह से पाठक को सुविधा होती है। छन्दब(कविता को सुमगता से कण्ठस्थ किया जा सकता है।

छन्द से कविता में सरसता, गेयता वेफ कारण अभिरूचि बढ़ जाती है। छन्द मानवीय भावनाओं को झंकृत कर उसवेफ नाप सौंदर्य में वृ(करता है।

छन्द के प्रकार एवम् उनके भेद

मात्रिाक छन्द–जिन छन्दों में मात्राों की संख्या निश्चित हो, मात्रिाक छन्द कहते हैं। दोहा, चौपाई, सोरठा, रौला, वुफण्डलिया आदि। दोहा–दोहा में चार चरण होते हैं। प्रथम न तृतीय चरण में 13–13 मात्रााएँ व द्वितीय चतुर्थ चरण में 11–11 मात्रााएँ होती हैं। समचरणों वेफ अन्त में क्रमशः गुरु एवम् लघु होता है। जैसे–

मुरली वाले मोहना, मुरली नेक बजाय। तेरो मुरली मन हरो, घर अँगना न सुहाय।।

सोरठा–यह दोहा का उल्टा होता है। इसवेफ पहले और तीसरे चरण में 11–11 मात्रााएँ और दूसरे व चौथे चरण में 13–13 मात्रााएँ होती है। प्रथम व तृतीय चरण वेफ अन्त में गुरु–लघु का विधान होता है। चौपाई–यह सम मात्रिाक छन्द है। चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में 16–16 मात्रााएँ होती हैं। चरण वेफ अन्त में गुरु–गुरु होता है।

वंदऊँ गुरु पद पदम परागा। सुबात सरस अनुरागा। अमिय मूरिमय चुरन चारु। समन सकल भव सज परिवारु।

कुण्डलिया–वुफण्डलिया मात्रिाक छन्द है। दो दोहों वेफ मध्य एक रोला मिलाकर वुफण्डलिया बनती है। पहले दोहे का अंतिम चरण ही रोला का प्रथम चरण होता हैं वुफण्डलिया का आरम्भ जिस प्रथम से होता है

अन्त में भी वह शब्द प्रयोग किया जाता है।

कमरी यौरे दाम की, बहुतै आवै काम। खासा मलमल नाफ्रता, उनकर राखै मान। उनकर राखै माज बँद जहँ आउै आवै। बवुफया बाँधे मारे राति को झीर बिछावै। कह
गिरधर कविराय मिलत है थोर दमरी। सब दिन राखै साथ, बड़ी मर्यादा कमरी।

हरिगीतिका–हरिगीतिका में 16 व 12 मात्राओं का विधान है। चार चरण होते है और 16 व 12 पर यति होती हैं अन्त लघु–गुरु का विधान है। बरवै–वेफ विषम चरणों एक व तीन में 12 मात्राएं और समचरणों दो व चार में 7–7 मात्राएं होती हैं। अन्त में लघु होता है।

अवीधे शिला का उर पर, था गुरु भार। तिल–तिल काट रहा था, दृग जल धार।

छप्पय–छप्पय शब्द षटपद से बना है। जिसका अर्थ है छः पदो वाला। यहाँ पद से अर्थ पंक्तियों से हैं। अर्थात छप्पय में छः पंक्तियाँ होती हैं। प्रत्येक पंक्ति में 24–24 मात्राएं होती हैं। उदाहरण–

जिसकी रज में लोट–लोट कर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक–सरक कर खड़े हुए हैं।

पद

पद क अर्थ छन्द में प्रायः चरण से होता है। पद नामक छन्द वेफ भी प्रायः टेक अथवा शीर्षक पंक्ति वेफ अतिरिक्त प्रायः चार से सात या आठ तक पद या पंक्तियाँ पाई जाती हैं। शीर्षक या टेक पंक्ति में 16 मात्राएं होती है और वुफल मात्राएं 28 होती हैं।

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी, पिफरि जहाज पर आवै। कमल नैन को छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै। सवैया–सवैया मात्रिाक छन्द हैं। सवैया में बहुविधता पीपा जाती है। यह ब्रजभाषा का सर्वाधिक लोकप्रिय छन्द है। इसवेफ चरणों वेफ प्रायः 22 से 26 मात्राओं या वर्णों का विधान रहता है। सवैया में प्राय एक गण वेफ वर्णों की ही आवृत्ति बार–बार होती है और अन्त में गुरु या लघु का विधान रहता है। यहाँ ध्यान रखने योग्य

बात यह हैं कि सवैया और कवित्त में लय प्रवाह को ध्यान में रखते हुए दीर्घ या गुरु वर्ण का उच्चारण भी ह्रस्व या लघु की भांति ही होता है और उसकी मात्राा गणना भी उच्चारण वेफ अनुरूप ही होती है। सवैया वेफ मुख्य भेद निम्नलिखित हैं।

मदिरा–क्रमशः 7 भगण ;भ. अन्त में एक गुरु ऽ. 22 वर्ण महागयन्द–7 भगण ;भ. अन्त दो गुरु ऽऽ. 23 वर्ण किरीट–8 भगण ;भ. अन्त दो गुरु ऽऽ. 24 वर्ण दुर्मिल–8 सगण ;स. अन्त दो गुरु ऽऽ. 24 वर्ण

सुन्दरी–8 सगण ;स. एक गुरु ऽ. 25 वर्ण वुफन्दलता–8 सगण ;स. अन्त में दो लघु ;।।. 26 वर्ण जैसे–

मानुष हौं तो वही रसरवीन बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन। जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौ नित नंद की धेनु मंझारन। पाहन हौं तो वही गिरि को जो धरयौ कर छत्रा पुरंदर धारन।

जो खग हौं तो बेसरो करौं नित कालिन्दी कूल कंदब की डारन।। 8 सगण 24 वर्ण किरीट सवैया। विस्तार भय से अन्य उदारण नहीं।

कवित्त

कवित्त एक वार्णिक छन्द है। कवित्त में की वर्णों की संख्या की ही गणना होती हैं और कवित्त में वर्णों की संख्या प्रायः 26 वर्णों से अधिक और तैंतीस वर्णों तक संभव है। प्रचलित कवित्तों वेफ वर्ण भेद से निम्न कवित्त भेद प्रायः प्रचलन में अधिक हैं। छनाक्षरी ;मनहरण. कवित्त ;31 वर्ण होते हैं अन्त में गुरु ऽ. होता है.

रूप छनाक्षरी कवित्त ;32 वर्ण होते हैं अन्त में लघु ;।. होता है।.देव छनाक्षरी कवित्त ;33 वर्ण होते हैं और अन्त में तीन लघु ;।।।. होते है।. जैसे–

सुमन–समूहों में सुहास भरता है कौन, मुकुलों में मकरन्द सा अनूप है।

....

घूंघट की ओर के छिपा है चला कैसे कभी, पफूटकर निखर बिखरता जो रूप है।

है।

प्रत्येक पंक्ति चरण में 31 वर्ण हैं और अन्त में गुरु ऽ है। अन्य उदाहरण विस्तार भय से संभव नहीं

हमारी पाठ्य पुस्तकों में प्रायः उपरोक्त उत्लेखित छन्दों का हो प्रयोग दृष्टिगत होता है। काव्यशास्त्रियों